अंक 10
अक्टूबर, वर्ष - 21

सभापति
डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी

सचिव
श्री मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी
मोबा. 098711-70559

कोषाध्यक्ष
श्री महेशचन्द्र चतुर्वेदी
मोबा. 09868875645

संपादक
डॉ. कुश चतुर्वेदी
पत्र व्यवहार का पता:
'चतुर्वेदी चंद्रिका', 3 रंगरेजन टोला,
छिपेटी, इटावा (उत्तरप्रदेश)
मोबा. 9411938577
ई- मेल :
kshchaturvedi8@gmail.com

व्यवस्थापक
शशांक चतुर्वेदी

वेबसाइट : www.chaturvedi-chandrika.com
www.chaturvedimahasabha.in

मासिक पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका में प्रकाशित लेखकों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं। उनसे संपादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निबटारा इटावा अदालत में किया जायेगा।

चतुर्वेदी चन्द्रिका

अपनों से मन की बात	06
संपादकीय	07
अपील	08
पुरुषोत्तम मास (अधिकमास)	09
जिंदगी हार गई	11
गलती का एहसास	13
नारी शक्ति का प्रादुर्भाव	15
हमारा समाज	17
सुख-दुख का सहोदर मोबाइल	18
निवाला	20
श्री महावतार बाबाजी	21
श्री राम जन्मभूमि-अयोध्या	23
संवेदना	24
पुण्य स्मृति दिवस (3 सितम्बर) पर विशेष	26
समाज समाचार	31
शोक समाचार	32

श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Account No. : 1006238340
IFSC Code : CBIN0283533
Branch : Central Bank of India
Anand Vihar, Delhi

पत्रिका पाँच वर्षीय तथा महासभा सदस्यता शुल्क
1000 + 501 = 1501/-
सत्र + वार्षिक सदस्यता शुल्क- 101+ 251 = 352/-

प्रकाशक : मुनीन्द्रनाथ चतुर्वेदी, श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा के लिए स्पेसिफिक ऑफसेट, भोपाल से मुद्रित, संपादक डॉ. कुश चतुर्वेदी

सभी सदस्यों को प्रत्रिका डाक द्वारा भेजी जाती है। पत्रिका न मिलने की दशा में पत्रिका कार्यालय की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

अपनों से मन की बात

● डॉ. प्रदीप चतुर्वेदी
Email : sabhapati.mahasabha@gmail.com

ॐ नमोः भगवते नमः, ॐ वासुदेवाय नमः

ॐ लक्ष्मी पतये नमः, ॐ श्री कृष्णाय नमः ॐ माधवाय नमः, ॐ गोविंदाय नमः

अधिक का माह सभी महीनों का अधिपति है। अधिक मास इस वर्ष 18 सितंबर से 16 अक्टूबर 2020 तक रहेगा। इस माह में भगवान पुरुषोत्तम (भगवान विष्णु) का पूजन किया जाता है। इन दिनों में विधिवत पूजा करने से सभी प्रकार के सुखों की प्राप्ति होती है तथा मृत्यु उपरांत बैकुंठ लोक में स्थान प्राप्त होता है। इस माह में दान पुण्य, हरि नाम संकीर्तन व पूजन करना चाहिए। इस माह में भागवत कथा, विष्णु पुराण के पाठ का विशेष महत्व है। इसके लाभ पुण्यकारी हैं। विष्णु सहस्त्रनाम, शालिग्राम के विग्रह के पाठ का भी विशेष महत्व है। इस माह में दान दक्षिणा का अपना बहुत महत्व है। इस माह भक्ति की गंगा में यथासंभव गोते लगाकर अपने आने वाले कल को उज्जवल व सुंदर बनाएं।

महासभा का वैभवशाली इतिहास अपने 100 वर्ष पूर्ण कर उत्तरोत्तर गतिमान है। महासभा का 34 वाँ अधिवेशन दिनांक 04 अक्टूबर 2020 को ऑनलाइन आयोजित किया जाएगा। कोरोना नामक बीमारी के चलते उत्पन्न परिस्थिति जन्य व आवश्यक शासकीय निर्देशों के अंतर्गत यह एकमात्र यथोचित सामायिक विकल्प है। महासभा के इतिहास में अधिवेशनों का विशेष महत्व रहा है। विगत अधिवेशन मुंबई, नागपुर, भोपाल, नेमीशरण, दिल्ली व मैनपुरी के अधिवेशनों की भव्यता व सुव्यवस्थित आयोजनों की चर्चा यदाकदा लोगों की जुबान पर आज भी आ ही जाती है। मैनपुरी अधिवेशन की मधुर स्मृतियां अभी भी हमारे जहन में तरोताजा हैं। इच्छा तो बहुत है आप सभी को बुलाने व मिलने की पर परिस्थितियों के आगे मजबूर है। आपकी आपके परिजनों की सुरक्षा सर्वोपरि है। कुछ समय बाद हम अवश्य मिलेंगे।

आज के समय में हमें समाज को एक सूत्र में बांधने की आवश्यकता है। अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को छोड़कर हमें संपूर्ण समाज के हित में कार्य करना चाहिए। हम लोग मिलकर कार्य करेंगे। तभी हम अपने समाज की संस्कृति व सांस्कृतिक विरासत की वैभवशाली धरोहर को बचाने में सफल होंगे। यही समय है जब हमें एक साथ मिलजुल कर कार्य करने की आवश्यकता है। मेरा विश्वास है कि आप सभी के सहयोग से हम इसमें अवश्य सफल होंगे। हमारे अपने गांवों में आजकल सामाजिक सहयोग से अपने आस्था केंद्रों के जीर्णोद्धार या पुनर्निर्माण का कार्य जोर शोर रहा है या पूर्णतः पर है। ऐसे प्रयासों के लिए साधुवाद।

आपके परिवार में होने वाले मांगलिक अवसरों पर अन्य आवश्यक दान पुण्य के साथ हमारे समाज की पत्रिका चतुर्वेदी चंद्रिका के लिए सहयोग राशि देकर उसे सहयोग प्रदान करे। समाज के बांधव अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का विज्ञापन वार्षिक या वर्ष में एक बार आवश्यक रूप से देकर पत्रिका को स्वावलंबी बनाने में सहयोग करे।आप पत्रिका के द्वारा अपने दिवंगत परिजनों को स्मरण स्वरूप श्रद्धा सुमन भी अर्पित कर सकते है। विगत कई वर्षों से हमें सतीश जी (नागपुर), संतोष जी (भोपाल), दिलीप जी (जलगाँव) से विज्ञापन के रूप में सतत सहयोग मिल रहा है। इसके लिए उनका बहुत-बहुत आभार। मैं अपने वरिष्ठ सहयोगी स्व.पृथ्वी नाथ जी (कमतरी/कानपुर) को अपनी व समाज की ओर से श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

ॐ श्री विष्णु नमः

संपादकीय

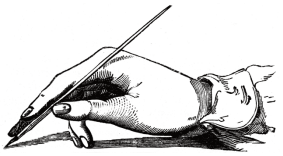

जीवन में समय की गति बहुत तेज होती है। वर्ष 2020 भी उत्तरार्ध्द की ओर है।नब्बे के दशक से ही इक्कीसवीं सदी के आगमन का शोर था। ऐसा लगता कि कोई स्वप्नपरी सी इक्कीसवीं सदी आयेगी और सब कुछ रुपहला होगा। यथार्थ बहुत कठोर होता है जो प्रस्तुति में कोई संकोच नहीं करता। देखते देखते नई सदी के दो दशक पार हो गए। परिवर्तन से तो नहीं नकारा जा सकता किन्तु समस्याओं, चिन्ताओं के भार में कोई कमी नहीं आयी। हम कुछ ज्यादा सुविधा भोगी हो गये। मानवीय संवेदनाओं के पोषण में हम पिछड़ने लगे। दूसरे की पीड़ा हमें उस तरह विचलित नहीं करती। जिस तरह की हमारी परम्परा थी। आत्मकेंद्रित समाज के निर्माण में इस नई शती की बड़ी भूमिका है। जिसका पेट भरा है वह आत्ममुग्ध है। जो समस्याओं के झंझावात झेल रहा है, वह स्वयं को उपेक्षित अनुभव कर रहा है।2020 में कोविड का प्रकोप सामाजिक दृश्य को ही बदल गया। शारीरिक दूरी को हमने सामाजिक दूरी का नाम दिया तो वास्तव में सामाजिक दूरी आकार लेने लगी। लोग एक दूसरे के घर आने जाने से बच रहे हैं। जिस सहालग में निमंत्रण पत्रों के अम्बार लगते थे। वहां लोग न्यौता की आवाज से भी दूर हो गए। कार्यक्रम, समारोह आदि पर मानो विराम सा लग गया। पिछले सौ वर्षों में शायद यह दृश्य लोगों ने पहली बार देखा। इस प्रकोप ने हमारे समाज की भी कई विभूतियों को ग्रस लिया। प्रकोप जिस तरह बढ़ रहा है। उसे देखते हुए बहुत सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उम्मीद है कि हम अपने स्वजनों,परिजनों को निरन्तर सावधानी बरतने को व्यक्ति दर व्यक्ति प्रेरित करते रहेंगे।

हमें कभी कभी ऐसे लेख और पत्र मिलते हैं। जिन पर लेखक का नाम भी अस्पष्ट होता है। कृपया पत्रिका को जो भी भेजें अंत में पूरा नाम, पता तथा मोबाईल नम्बर भी लिख दिया करें ताकि कहीं कुछ पुष्टि करनी हो अथवा टाइपिंग त्रुटि की स्थिति में संपर्क में सहजता रहती है। नई पीढ़ी में जब तक लेखन और अध्ययन में रुचि नहीं बढ़ेगी। तब तक हम अपने लक्ष्य से दूर रहेंगे। मैंने कई बार आग्रह किया है कि नए लोग नये विषयों पर लिखें। अपने कार्य क्षेत्र से सम्बंधित जानकारीपरक कुछ लिखें तो समाज तक नई विषयवस्तु पहुंचेगी। साहित्य, संगीत,कला,व्यवसाय,तकनीक न जाने कितने विषय हैं। जिन क्षेत्रों में हमारे अपने लोगों को विशेषज्ञता मिली है। हमने प्रयास किया कि उन तक पहुंचा जाये। कुछ लोगों तक पहुंचा भी लेकिन वांछित सफलता न मिल सकी। हमें आशा है कि आज नहीं तो कल सफलता अवश्य मिलेगी। पुराने संपादकों ने भी इस दिशा प्रयास किये मुझसे जो हो सम्भव है कोशिश की और आने वाले कल में जो भी संपादन का दायित्व सम्हालेगा। वह भी जी भर प्रयास करेंगे ऐसा मेरा विश्वास है।प्रयास चलते रहने चाहिए। पत्रिका को समय के अनुरूप निखारना हम सबका उद्देश्य है। यह भी हो सकता है मेरी वैयक्तिक व्यस्तता के कारण प्रयास में कुछ कमी रह गयी।

महासभा का अधिवेशन ऑनलाइन हो रहा है। नई तकनीक से हम सब जुड़ रहे है। यह समयसापेक्ष परिवर्तन है और विवशता भी। हमारे आदरणीय सभापति जी श्रद्धेय डॉ. प्रदीप जी बहुत अनुभवी, समर्पित और सुयोग्य व्यक्तित्व के धनी है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनका कार्यकाल स्वर्णिम हो। अधिवेशन की सफलता हेतु मङ्गल कामनायें।

विजयादशमी और नवरात्रि का पर्व सामने है। सत्य की असत्य पर विजय का प्रतीक विजय दशहरा। हम केवल कागज के रावण को न जलाएं। हमें अपने मन के रावण को हराना है। मन के राम जब तक शक्तिवान नहीं होंगे। तब तक कुछ भी सम्भव नहीं। हमारे अन्त : के रावणत्व को जब तक हम पराजित नहीं करते। तब तक हमारी चिन्तन दृष्टि रचनात्मक नहीं बन पाती। हम सब जब नकारात्मक चिन्तन को हराकर सकारात्मक होते हैं। हमारे मन मे बसे राम सक्रिय हो जाते है। फिर हम कुछ श्रेयस्कर कर पाते हैं। दोनों पर्वों की बहुत बहुत मङ्गल कामनायें।

सादर

(डॉ. कुश चतुर्वेदी)

अपील
20 सितंबर 2020

संघर्षरत सजातीय बान्धवों को सहयोग राशि महासभा द्वारा समाजहित की योजनाओं जैसे अन्नपूर्णा, महिला सहायता, छात्रवृत्ति आदि के माध्यम सहायता प्रदान की जाती है ।

अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत वर्तमान सभापति डॉ. प्रदीप जी, द्वारा सम्पूर्ण समाज से अधिक से अधिक शीघ्र सहयोग की अपील की गई है। वर्तमान में 34 परिवार को सहायता भेजी जा रही है। प्रत्येक परिवार क़ो अन्नपूर्णा योजना के अंतर्गत सालाना सहायता 12000/- रुपये भेजे जाते है। सहायता त्रैमासिक आधार पर सीधे लाभार्थी के बैंक खाते में भेजी जाती है। आप सभी से इस पुण्य कार्य में सहयोग की अपेक्षा है।

डॉ. प्रदीप जी की अपील पर चतुर्वेदी चंद्रिका के विगत अंक में 17 अगस्त 2020 तक समाज हितैषीयों की सूची का प्रकाशन किया गया था। जिसमें आप सभी के सहयोग से अभी तक समाज द्वारा रुपये 6,77,001/- कोष में एकत्र हुए। इससे आगे निम्न सम्मानित बान्धवों ने अन्नपूर्णा सहायता राशि में अपना अमूल्य योगदान किया है :-

78. दादी पूज्यनीया स्व. श्रीमती शारदा देवी एवम् बाबा स्व. छोटेलाल जी की पुण्य स्मृति में श्रीमती दीपाली (सिंगापुर) पुत्री श्री नरेन्द्रनाथ जी (पिनाहट/गुरुग्राम) -24000/-

79. श्री विवेक चतुर्वेदी पुत्र श्री हृदय नाथ चतुर्वेदी, (उरई, काशी निवास,जयपुर/ दिल्ली) - 10,000/-

80. श्री सौरभ पाण्डे फरौली/नॉएडा -10000/- (प्रत्येक माह 10,000 एक वर्ष तक)

81. डॉ. प्रतिभा चतुर्वेदी, रीवा -6000/-

82. श्री हिमांशु सुपुत्र श्री दिलीप चतुर्वेदी बड़ा घर, होलीपुरा / शंघाई - 12000-

83. पूज्यनीय माताजी स्व. श्रीमती सावित्री एवं पिताश्री स्व.नरसिंह दास जी चतुर्वेदी की स्मृति में श्री कृष्ण कांत चतुर्वेदी (होलीपुरा/लखनऊ) -12000/-

84. दादी स्व. श्रीमती जामवंती बाई पत्नी स्व. गोविंद दास की स्मृति में श्री ज्ञानेश चतुर्वेदी, हैदराबाद द्वारा - 6000/-

85. स्व. श्री सत्यदेव चतुर्वेदी की स्मृति में श्रीमती करुणा चतुर्वेदी (अनूपशहर/कोलकाता) द्वारा 5100/-

86. सौरभ पांडेय (फरौली/नोयडा) -10,000 (एक वर्ष तक मासिक सहायता)

87. आयोजन समिति,पुरा कन्हैरा के तत्वावधान में सर्वश्री पंकजजी, प्रदीपजी "संजू", अभयराज जी, विशाल जी द्वारा - (महिला सहायता हेतु) -12000/-

88. स्व० श्री अवधेश चन्द्र चतुर्वेदी (तालगांव), पूर्व सदस्य महासभा कार्यकारिणी) की 9 अक्टूबर को प्रथम पुण्य तिथि पर उनकी स्मृति में श्री दीपचन्द्र चतुर्वेदी (तालगांव/लखनऊ) द्वारा- रु. 12000/-

89. स्व. प्रमोद चतुर्वेदी (गढ़ी वाले, होलीपुरा/मेरठ/कोलकाता) की स्मृति में पत्नी श्रीमती आशा चतुर्वेदी (कोलकाता) द्वारा - 12000/-

90. श्री अशोक चतुर्वेदी एवं श्री आनंद चतुर्वेदी (होलीपुरा /फ़रीदाबाद/ग्वालियर) द्वारा -12000/-

*Total - Rs. 8,08,101/-

विनम्रतापूर्वक आभार

सहयोग राशि भेजने के लिए :-
महासभा खाता विवरणः
Shri Mathur Chaturvedi Mahasabha
Saving A/C no.1006238340
ifs code- cbin0283533
Central bank of india
Branch- Anand vihar delhi

सहायतार्थ राशि के हस्तांतरण की सूचना के साथ ई-मेल आई डी की जानकारी देने की भी कृपा करें।

मुनींद्र नाथ चतुर्वेदी, मंत्री
कार्यवाहक सलाहकार मंडल
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9871170559

शशांक चतुर्वेदी, सदस्य
कार्यवाहक सलाहकार मंडल
श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा
Mob. 9826086879

पुरुषोत्तम मास (अधिकमास)

(18 सितंबर से 16 अक्टूबर)

- श्रीमती कनक (होलीपुरा/कोलकाता)

हर तीन साल में एक बार एक अतिरिक्त माह का प्राकट्य होता है, जिसे अधिकमास, मल मास या पुरूषोत्तम मास के नाम से जाना जाता है। सनातन धर्म में इस माह का विशेष महत्व है। संपूर्ण भारत की सनातन धर्मपरायण जनता इस पूरे मास में पूजा-पाठ, भगवद् भक्ति, व्रत-उपवास, जप और योग आदि धार्मिक कार्यों में संलग्न रहती है। ऐसा माना जाता है कि अधिकमास में किए गए धार्मिक कार्यों का किसी भी अन्य माह में किए गए पूजा-पाठ से 10 गुना अधिक फल मिलता है। यही वजह है कि श्रद्धालु जन अपनी पूरी श्रद्धा और शक्ति के साथ इस मास में भगवान को प्रसन्न कर अपना इहलोक तथा परलोक सुधारने में जुट जाते हैं। अब सोचने वाली बात यह है कि यदि यह माह इतना ही प्रभावशाली और पवित्र है, तो यह हर तीन साल में क्यों आता है? आखिर क्यों और किस कारण से इसे इतना पवित्र माना जाता है? इस एक माह को तीन विशिष्ट नामों से क्यों पुकारा जाता है? इसी तरह के तमाम प्रश्न स्वाभाविक रूप से हर जिज्ञासु के मन में आते हैं। तो आज ऐसे ही कई प्रश्नों के उत्तर और अधिकमास को गहराई से जानते हैं।

इस मास में अधिक से अधिक महा मंत्र का जप करे

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे

भगवत गीता पाठ करें

भागवत कथा सुने या खुद पढ़े

कृष्ण को रोज घी का दीपक लगाए और हरि /विष्णु /कृष्ण/ राम नाम का जप करें

हर तीन साल में क्यों आता है अधिकमास- वशिष्ठ सिद्धांत के अनुसार भारतीय ज्योतिष में सूर्य मास और चंद्र मास की गणना के अनुसार चलता है। अधिकमास चंद्र वर्ष का एक अतिरिक्त भाग है, जो हर 32 माह, 16 दिन और 8 घटी के अंतर से आता है। इसका प्राकट्य सूर्य वर्ष और चंद्र वर्ष के बीच अंतर का संतुलन बनाने के लिए होता है। भारतीय गणना पद्धति के अनुसार प्रत्येक सूर्य वर्ष 365 दिन और करीब 6 घंटे का होता है, वहीं चंद्र वर्ष 354 दिनों का माना जाता है। दोनों वर्षों के बीच लगभग 11 दिनों का अंतर होता है, जो हर तीन वर्ष में लगभग 1 मास के बराबर हो जाता है। इसी अंतर को पाटने के लिए हर तीन साल में एक चंद्र मास अस्तित्व में आता है, जिसे अतिरिक्त होने के कारण अधिकमास का नाम दिया गया है।

पुरूषोत्तम मास क्यों और कैसे पड़ा नाम

अधिकमास के अधिपति स्वामी परम भगवान कृष्ण माने जाते हैं।

पुरूषोत्तम भगवान कृष्ण का ही एक नाम है।

इसीलिए अधिकमास को पुरूषोत्तम मास के नाम से भी पुकारा जाता है। इस विषय में एक बड़ी ही रोचक कथा पुराणों में पढ़ने को मिलती है। कहा जाता है कि भारतीय मनीषियों ने अपनी गणना पद्धति से हर चंद्र मास के लिए एक देवता निर्धारित किए। चूंकि अधिकमास सूर्य और चंद्र मास के बीच संतुलन बनाने के लिए प्रकट हुआ, तो इस अतिरिक्त मास का अधिपति बनने के लिए कोई देवता तैयार ना हुआ। ऐसे में ऋषि-मुनियों ने भगवान श्रीकृष्ण से आग्रह किया कि वे ही इस मास का भार अपने उपर लें। भगवान श्रीकृष्ण ने इस आग्रह को स्वीकार कर लिया और इस तरह यह मल मास के साथ पुरूषोत्तम मास भी बन गया।

मास हर व्यक्ति विशेष

अधिकमास को पुरूषोत्तम मास कहे जाने का एक सांकेतिक अर्थ भी है। ऐसा माना जाता है कि यह मास हर व्यक्ति विशेष के लिए तन-मन से पवित्र होने का समय होता है। इस दौरान श्रद्धालुजन व्रत, उपवास, ध्यान, योग और भजन- कीर्तन-

मनन में संलग्न रहते हैं और अपने आपको भगवान के प्रति समर्पित कर देते हैं। इस तरह यह समय सामान्य मनुष्य से उत्तम मनुष्य बनने का होता है, मन के मैल धोने का होता है। यही वजह है कि इसे पुरूषोत्तम मास का नाम दिया गया है।

अधिकमास का पौराणिक आधार क्या है

अधिक मास के लिए पुराणों में बड़ी ही सुंदर कथा सुनने को मिलती है। यह कथा दैत्यराज हिरण्यकश्यप के वध से जुड़ी है।

पुराणों के अनुसार दैत्यराज हिरण्यकश्यप ने एक बार ब्रह्मा जी को अपने कठोर तप से प्रसन्न कर लिया और उनसे अमरता का वरदान मांगा। चुकि अमरता का वरदान देना निषिद्ध है, इसीलिए ब्रह्मा जी ने उसे कोई भी अन्य वर मांगने को कहा। तब हिरण्यकश्यप ने वर मांगा कि उसे संसार का कोई नर, नारी, पशु, देवता या असुर मार ना सके। वह वर्ष के 12 महीनों में मृत्यु को प्राप्त ना हो। जब वह मरे, तो ना दिन का समय हो, ना रात का। वह ना किसी अस्त्र से मरे, ना किसी शस्त्र से। उसे ना घर में मारा जा सके, ना ही घर से बाहर मारा जा सके। इस वरदान के मिलते ही हिरण्यकश्यप स्वयं को अमर मानने लगा और उसने खुद को भगवान घोषित कर दिया। समय आने पर भगवान विष्णु ने अधिक मास में नरसिंह अवतार यानि आधा पुरूष और आधे शेर के रूप में प्रकट होकर, शाम के समय, देहरी के नीचे अपने नाखूनों से हिरण्यकश्यप का सीना चीन कर उसे मृत्यु के द्वार भेज दिया।

अधिकमास का महत्व क्या और क्यों है

सनातन धर्म के अनुसार प्रत्येक जीव पंचमहाभूतों से मिलकर बना है। इन पंचमहाभूतों में जल, अग्नि, आकाश, वायु और पृथ्वी सम्मिलित हैं। अपनी प्रकृति के अनुरूप ही ये पांचों तत्व प्रत्येक जीव की प्रकृति न्यूनाधिक रूप से निश्चित करते हैं। अधिकमास में समस्त धार्मिक कृत्यों, चिंतन- मनन, ध्यान, योग आदि के माध्यम से साधक अपने शरीर में समाहित इन पांचों तत्वों में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस पूरे मास में अपने धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयासों से प्रत्येक व्यक्ति अपनी भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति और निर्मलता के लिए उद्यत होता है। इस तरह अधिकमास के दौरान किए गए प्रयासों से व्यक्ति हर तीन साल में स्वयं को बाहर से स्वच्छ कर परम निर्मलता को प्राप्त कर नई उर्जा से भर जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस दौरान किए गए प्रयासों से समस्त कुंडली दोषों का भी निराकरण हो जाता है।

अधिकमास में क्या करना उचित और संपूर्ण फलदायी होता है

आमतौर पर अधिकमास में श्रद्धालु व्रत- उपवास, पूजा-पाठ, ध्यान, भजन, कीर्तन, मनन को अपनी जीवनचर्या बनाते हैं। पौराणिक सिद्धांतों के अनुसार इस मास के दौरान यज्ञ-हवन के अलावा श्रीमद् भागवत पुराण, श्री विष्णु पुराण, भविष्योत्तर पुराण आदि का श्रवण, पठन, मनन विशेष रूप से फलदायी होता है। अधिकमास के अधिष्ठाता भगवान विष्णु हैं, इसीलिए इस पूरे समय में विष्णु मंत्रों का जाप विशेष लाभकारी होता है। ऐसा माना जाता है कि अधिक मास में विष्णु मंत्र का जाप करने वाले साधकों को भगवान विष्णु स्वयं आशीर्वाद देते हैं, उनके पापों का शमन करते हैं और उनकी समस्त इच्छाएं पूरी करते हैं।

पथ ने पहचाना वह राही

-श्री तुलसीराम चतुर्वेदी, भरतपुर

जो दो डग चल कर ठहर गया उससे पथ का परिचय क्या है, पथ ने पहचाना वह राही जिसके पैरों की गति न थकी, सौ मोड़ राह ने लिए लक्ष्य से मंज़लि ओझल हो न सकी, पथ ने पहचाना वह राही।

डग एक एक जिसका विश्वासों का निर्माण किए आया, जो अपने पीछे अनगिनती पथिकों के चरण लिए आया, पथ ने पहचाना वह राही।

पथ ने पहचाना वह राही जिसकी गति में तूफान भरा, पग जिसका हिलते ही युग की निद्रा से उठ हिल गई धरा, पथ ने पहचाना वह राही।

कांटों से जिसका मेल पंथ ने वह राही पहचाना है, बलिदानों की दुनिया से पथ का परिचय बहुत पुराना है, कह रही गूँज बलिदानों की बढ़ चल चलने में भय क्या है, जो दो डग चल कर ठहर गया उससे पथ का परिचय क्या है।

जिंदगी हार गई

- श्रीमती सुबोध चतुर्वेदी, ग्वालियर

क्यों रे पप्पू नहीं मानेगा ? अब खेलता ही रहेगा कि स्कूल भी जाएगा। देख, मैं तेरे लिए कितना अच्छा बस्ता खरीद कर लाई हूँ। पर स्कूल में पहले की तरह किताबें मत गुमाना। अच्छा अब, जल्दी तैयार हो जा नहीं तो बुलाती हूँ दरोगा जी को। दरोगा जी, यानी सावित्री के काल्पनिक पति। पप्पू, रमिया, मुन्ना, छुटकू, लक्ष्मी ना जाने कितने काल्पनिक बच्चे। रोज बच्चों पर डांट पड़ती। कभी स्कूल जाने के लिए, कभी घर, पर पढ़ने के लिए, कभी समय पर ना सोने के लिए। बच्चों के नाम रोज बदल जाते पर पति दरोगा जी ही रहते। सावित्री मेरी इस कहानी की केंद्रीय पात्र है। पैदाइशी कुछ-कुछ पागल है। माँ दो-चार घर के बर्तन करती थी। पति दो छोटी लड़कियों को छोड़कर अचानक चल बसे थे। पहले जिंदगी अपनी सही रफ्तार से चल रही थी, वह मजदूरी करते थे। घर में गुजर-बसर आराम से हो रही थी कि यकायक गर्मी के दिनों में काम पर ही लू-लपट लगने से प्राण पखेरू उड़ गये। होनी को कौन टाल सकता है? माँ ने दिल पर पत्थर रख लिया।

घर-घर पर काम करना शुरू किया। सावित्री की माँ को देखकर समझा जा सकता है कि कैसे दुनिया बदल जाती है। छोटी लड़की दमयन्ती थी। वह अपनी उम्र से ज्यादा होशियार थी। शायद सावित्री के हिस्से की बुद्धि भी उसकी झोली में विधाता ने डाल दी थी। परिणाम यह निकला कि किसी भी तरह माँ ने छोटी लड़की को स्कूल भेजना जारी रखा। फीस माफ होती रही, स्कूल से किताबें मिलती रही। कुछ दो चार रहम दिल मिल जाते थे। जो उसकी यूनिफार्म आदि का खर्चा उठा लेते थे। जब दमयन्ती बी. ए. में पढ़ रही थी। माँ ने एक अच्छा लड़का देख कर ब्याह रचा दिया।

सावित्री की जिंदगी में नाटकीय मोड़, दमयन्ती के विवाह के बाद ही आया।अचानक सावित्री ने विद्रोह कर दिया।पहले माँ के साथ काम पर जाती थी। अब उसने जाने से साफ मना कर दिया। उसका पागलपन दिन पर दिन बढ़ने लगा। मन में दबी इच्छा सिर उठाने लगी। एक कुमारी लड़की के सपने अगड़ाई लेकर जाग गए। अभी तक वह स्वयं को कामकाज में व्यस्त रखती थी। पर अब खाली समय, खाली दिमाग में दरोगा के रुप में पति की कल्पना की। उसकी नजर में सबसे ताकतवर इंसान पुलिस का दरोगा होता होगा। उसकी दबी चाहत रही होगी कि दरोगा की बीवी मानकर सब उसको सलाम करें। उसके साथ अदब से पेश आएं। वह जब-तब आस-पास वालों से उलझ जाती। गालियाँ देने पर उतर आती। कभी-कभी डंडा उठा लेती। फिर धमकी देती-यह दरोगा का डंडा है,ऐसी मार मारेगा की नानी याद आएगी।

कभी थाने में बंद करवाने की धमकी देती-आने दो दरोगा जी को बाँधकर तुम सबके बेंत लगवा दूँगी, छठी का दूध याद आ जाएगा। लोग परिहास करते, कभी तरस खाते। बच्चे तो नासमझ होते हैं। उनके लिए तो सावित्री मनोरंजन का साधन थी। दमयंती के ससुराल चले जाने से वह कुछ ज्यादा ही उग्र हो गई थी। आज सुबह तो हद हो गई। उसने माँ का माथा फोड़ दिया, ईट दे मारी। बेचारी का कसूर इतना ही था कि उसने घर में झाड़ू बर्तन करने को कह दिया था, वह अचानक हिंसक हो उठी थी। तुम जानती नहीं किससे बात कर रही हो। मैं दरोगा की बीवी हूँ। तुम्हारे घर में झाड़ू बर्तन करूंगी। आइन्दा कहकर देखना। निशाना बांधकर ईट दे मारी थी। खून का प्यारा बह निकला था और हम लोग जबरदस्ती उसे पट्टी बनवाने के लिए डॉक्टर के यहां ले गए थे। रास्ते भर उबलती रही थी। अब आप ही बताओ इसे छोड़कर मैं कैसे काम पर जाऊं दिन भर तो खाने को चाहिए। एक बार में आठ-दस रोटी खाएगी।अकेला छोड़ कर जाओ, तो आफत पता नहीं, किसकी मार-पीट कर डाले। बंद करके उस दिन गई तो आपने देखा ही था। बक्से के सारे कपड़े निकाल कर कमरे में आग लगा दी थी। वह तो भला हो आप लोगों का समय रहते बचा लिया नहीं तो मेरा पूरा घर ही राख हो जाता।

मेरी आँखों में उस दिन का दृश्य कौंध गया। सर्दियों के दिन थे मैं दोपहर धूप में छत पर बैठी किताब पढ़ रही थी अचानक सावित्री के घर की ओर निगाह गई, खिड़की में धुआं निकल रहा था। दरवाजे पर ताला लटक रहा था। अनहोनी की आशंका से मैं काँप गई। तुरंत अड़ोस -पड़ोस को एकत्र किया। खिड़की में

से देखा। कपड़ों की होली जल रही है और सावित्री ताली बजा – बजाकर ठहाके लगा रही है। किसी तरह उसे बाहर निकाला।आग बुझाई गई पर उस पर किसी भी बात का असर नहीं था। शाम को जब उसकी माँ लौटी तो पूरा वाकया जानकर स्तब्द्ध रह गई। कहने लगी आपने मेरी बेटी को बचा लिया, इसने तो चिता जला ली थी, मैं जिंदगी भर अपने को माफ नहीं कर पाती। मैं आपका कर्ज कैसे चुकाऊँगी।

उसकी स्थिति देखकर बड़ा तरस आता था। मेरे एक परिचित मानसिक चिकित्सालय में पदस्थ थे। बड़ी मुश्किल से समझा–बुझाकर सावित्री को वहाँ ले जाया गया। निरीक्षण के दौरान उसने उन्होंने दो ही बातें बताई। एक तो उसकी बीमारी इतनी भी गंभीर नहीं थी कि उसे पागलखाने में रखा जाये। दूसरे बीमारी के लक्षण तभी दिखते थे जब किसी कारण से वह उग्र होती थी अन्यथा वह सिर झुकाए चुपचाप मकान मालिक के यहाँ 24 घंटे काम करती रहती थी। एक खासियत उसमें जो थी। काम करते–करते उसका स्वगत भाषण। उस समय वह किसी की माँ होती थी किसी की पत्नी होती थी। कभी दरोगा जी पर नाराज होती। वे उसे सिनेमा दिखाने क्यों नहीं ले जाते। कभी बड़े मनुहार से उन्हें हलवा, खीर खिलाना चाहती। कभी उनसे बच्चों की शिकायत करती। कभी उनसे प्रेम की बातें करती। काल्पनिक बच्चे भी दो–चार हमेशा उसके आसपास रहते। अक्सर जो मन में आ जाता, उसी नाम से उन्हें संबोधित करती, कभी प्यार करती, कभी मारती डांटती। कहने का मतलब यह सारे क्रियाकलाप उसे एक काल्पनिक दुनिया में ले जाते जो उसकी वास्तविक दुनिया से कोसों दूर थी पर अबचेतन में कहीं ना कहीं तो गृहस्थ जीवन का सुख उठाने की भी चाह अवश्य थी। जो इस तरह जब तब उजागर होती रहती थी।

उसकी माँ की चिंता यही थी कि मेरे बाद उसका क्या होगा। मैं कोई जिंदगी भर तो बैठी नहीं रहूँगी। हम लोग उसे तसल्ली देते। भगवान की रचना है यह,तो उन्होंने कुछ तो सोचकर ही इसे धरती पर भेजा होगा पर निःश्वास लेते हुए वह कहती, मैं आपसे सच कह रही हूँ, मैं तो भगवान से यही मानती हूँ कि हे भगवान मेरे जीते जी इसे अपने पास बुला ले। धरती पर तुमने जो बोझ भेजा है, उसे तुम ही हल्का कर दो। क्या कोई माँ अपने बच्चे के लिए ऐसी दुआएँ मांग सकती है। पर मैं ऐसी ही एक अभागी माँ हूँ। अपनी बच्ची की मौत की रात दिन कामना करती हूँ।

पता नहीं उस माँ की दुआ में क्या असर था। सावित्री को मौत तो नहीं आई पर उसके साथ जो हुआ वह मौत से भी बदतर था। जवान शरीर था, दिमाग सही नहीं था तो क्या हुआ? किसी मनचले ने कभी मौका पाकर उसे अपनी हवस का शिकार बना लिया। सबको पता तब चला जब शाम के झुटपुटे में वह रोती चिल्लाती उस अज्ञात व्यक्ति की सात पीढ़ियों को तारते हुए घर लौटी। उसे यह तो भान हो गया था कि उसके साथ कुछ गलत हुआ है पर क्या ? वह यह समझने में असमर्थ मुठिया तान रही थी कभी अपने कपड़े नोंचने लगती थी। हवा स्तंभ हो गई थी ।इतने लोग खड़े थे, पर सभी असहाय से, पुरुष वर्ग गुस्से से मुटिठयाँ भींच रहा था।स्त्रियाँ अब क्या होगा, का प्रश्न आंखों में लिए एक दूसरे की ओर देख रही थी।सावित्री की माँ सिर पकड़े एक कोने में बैठी थी। पुलिस में रिपोर्ट करने की बात भी उठी, मेडिकल भी होगा, पर पुलिस का रवैया सब जानते हैं, और शिकायत दर्ज भी होगी तो किसके खिलाफ। माँ ने इसे भी किस्मत का खेल समझकर परिस्थितियों से समझौता कर लिया। पर समस्या तो तब आ खड़ी हुई जब दो–तीन महीने में सावित्री की देह में परिवर्तन दिखने शुरू हुए।

अलसाई सी खाट पर पड़ी रहती। खाना खाते ही उल्टी कर देती। माँ का माथा ठनका। वह घबराई हुई मेरे पास आई– अब आप बताओ मैं कहाँ जाऊं? यह एक मुसीबत कम थी मेरे लिए, अब दूसरी और? वह फूट–फूट कर रो रही थी आप तो डॉक्टर से कह– सुनकर छुटकारा दिलवा दो। मैंने उसे आश्वासन तो दे दिया पर मेरी नजर में उसके वह काल्पनिक बच्चे घूमने लगे। उसका मातृत्व मानो चुनौती बनकर मेरे सामने खड़ा हो गया, मुझे लगने लगा कि हम में से किसी को भी क्या हक बनता है, ममता से उसे वंचित करने का। एक औरत के लिए माँ बनना दुनिया के सुंदरतम उपहारों में से एक है। और उसे हम लोग ही, उससे वंचित करने के बारे में सोच भी कैसे सकते हैं? विकल्प ढूंढते– ढूंढते मेरा सिर चकरा उठा। यदि हम लोग सोचे कि उसके बच्चे की परवरिश कोई और कर लेगा।

दुनिया में बहुत से निःसंतान दंपत्ति मौजूद है पर यदि बच्चा पागलपन के लक्षण लेकर पैदा हुआ तो? यह एक बड़ा प्रश्न चिन्ह सामने आकर खड़ा हो गया। इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। मैं आंखों में आँसू लिए इस समस्या का निदान ईश्वर से चाह रही थी। रोज रात को सोने से पहले प्रभु से प्रार्थना करना नहीं भूलती थी। ईश्वर अपने भक्तों की सुध अवश्य लेता है। कोई ना कोई इस समस्या का निदान सामने आ ही जाएगा, दिन ऐसे ही बीत रहे थे। प्रकृति भी चारों ओर से उदास सी लगती थी और एक दिन ममातक पीड़ा को झेलती हुई सावित्री को अचानक अस्पताल ले जाया गया। ईश्वर ने संभवतः समाधान खोज लिया था। असमय हुई प्रसव पीड़ा से बच्चा तो काल कलवित हुआ ही ,साथ ही बहुत अधिक रक्त बहने से सावित्री को भी नहीं बचाया जा सका था। माँ का फूट– फूट कर रोना,हम लोगों की निःशब्द सान्त्वना। ईश्वर के पास इससे अच्छा निदान नहीं हो सकता था। वह जिंदगी हार गई थी।

गलती का एहसास

- डॉ. बीना चतुर्वेदी, जयपुर

अरे तुम कब आए? जब रचना पड़ोस के घर से वापस आई तो सुरेश से पूछने लगी। बस अभी अभी। रचना कहने लगी भाई तुम इतने परेशान और थके हुए क्यों लग रहे हो, क्या बात है, मुझे बताओ। सुरेश कहने लगा, नहीं कुछ भी तो नहीं। हाँ, तुम्हारे पतिदेव मिले थे। यह सुनकर रचना का माथा ठनका वह सोचने लगी कि सुरेश ऐसे क्यों बोल रहा है। मेरी मानसिक स्थिति को यह अच्छी तरह समझता है। कहीं मुझे यूँ ही छेड़ तो नहीं रहा याकि सच बोल रहा है। वह फिर से सुरेश से पूछने लगी क्या कहा? सुरेश कुछ क्षण मौन रहकर धीरे से कहने लगा कुछ नहीं। रचना परेशान होकर सुरेश से कहने लगी अरे भाई तुम सच सच बताओ कि क्या कहना चाहते हो तुम। मुझसे क्या छुपा रहे हो मुझे साफ-साफ शीघ्र ही बताओ। सुरेश ने गंभीर स्वर में कहा कि दीदी आप सुन नहीं सकेंगी। अपने भाई की यह बात सुनकर रचना की बेचैनी बढ़ने लगी और उसे विश्वास हो गया कि अवश्य ही कुछ गड़बड़ है। रचना ने धड़कते हुए दिल से सुरेश से कहा कि वह खुलकर उसे सब कुछ बताएं। तुझे इतनी हिचक क्यों हो रही है। मैं सब कुछ तुम्हारे मुँह से अभी इसी समय सुनना चाहती हूँ। सुरेश कहने लगा कि सब कुछ मैं आपको बताता हूँ। मैं टूर पर गया था। वहां रास्ते में मुझे आपके पतिदेव मिले थे। उनके साथ एक महिला भी थी। मैंने जब उन्हें अभिवादन किया, तो उन्होंने बड़ी बेरुखी के साथ मुझे कहा, कि जाकर अपनी दीदी से कह देना कि अब मुझे उसकी कोई आवश्यकता नहीं है। मुझे नई जीवन साथी मिल गई है। तुम देख रहे हो। सुरेश की बात सुनकर रचना जोर से चीख पड़ी व कहने लगी नहीं ऐसा कभी नहीं हो सकता। कतई नहीं हो सकता। उसकी हालत विक्षिप्त जैसी हो गई। सुरेश दुखी स्वर में कहने लगा कि दीदी यह सच है कि उसके साथ जो लड़की थी। उसने भी इस बात को स्वीकार किया और कहा कि अपनी दीदी से कह देना कि अब उसे यहाँ आने की आवश्यकता नहीं है। गलती से भी यहाँ आने का विचार अपने मन में ना लाएँ। जल्दी ही उसे तलाकनामा मिल जाएगा और सभी संबंध टूट जाएंगे। ऐसा कहकर दोनों ठहाका मारकर हंसने लगे। मैं चुपचाप वहां से चला आया। सुरेश के मुंह से इस तरह की अनर्गल बातें सुनकर रचना की आंखों से अश्रु धारा प्रवाहित होने लगी। वह फूट-फूट कर रोने लगी। कुछ समय में उसने स्वयं पर काबू पाया व सोचने लगी कि यदि यह बात मम्मी पापा को मालूम पड़ी। तो बस कयामत आ जाएगी। वह सुरेश से कहने लगी कि भाई इस बात का पता घर में किसी को भी नहीं लगना चाहिए। वह दुखी मन से अपने कमरे में चली गई। पलंग पर लेट कर जोर जोर से रोने लगी। आंसू इस तीव्रता से बह रहे थे कि कुछ देर में ही उसके आंसुओं से पूरा तकिया भीग गया। उसे ऐसा लग रहा था कि सिर दर्द के कारण आज उसका सिर कहीं फट ना जाए। बस उसके दिल को एक ही बात लगातार कचोट रही थी कि नीरज ने ऐसा क्यों किया। इसी बारे में सोचते हुए वह स्मृतियों में खो गई। कुछ दिन पूर्व मिले नीरज के अंतिम पत्र में लिखी बातें उसे परेशान करने लगी। नीरज ने उस पत्र में लिखा था कि रचना मैं अपनी गलती को स्वीकार कर चुका हूँ और तुमसे माफी भी मांग चुका हूँ। परंतु उसके बाद भी तुम्हारा ऐसा व्यवहार है जो मेरी समझ में नहीं आ रहा है। तुम इतनी जिद्दी क्यों हो। तुम्हारी इस जिद से किसी को कुछ नहीं मिलेगा। सिवाय तनाव के। भगवान के लिए मेरी बात मानो। मैं स्वयं ही तुम्हें लेने आना चाहता हूँ। मगर तुम मेरी मजबूरी को क्यों नहीं समझ रही। ऑफिस में कार्य की अधिकता के कारण छुट्टी नहीं मिल रही। आज कल ऑफिस से आने में भी मुझे बहुत देर हो जाती है। यदि मैं तुम्हें लेने आऊं, तो कम से कम 2 दिन की छुट्टी तो चाहिए ही। यह लोग तो दो चार घंटे की भी छुट्टी नहीं दे रहे हैं। छुट्टी पर रोक लगा रखी है। तुम्हारे बिना मुझे कितनी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। शायद तुम इसका अंदाजा नहीं लगा पा रही हो। मुझ पर दया करो। अपनी जिद्द छोड़ो और शीघ्र आ जाओ। पत्र पढ़ने के बाद रचना ने अपनी जिद छोड़ने का निर्णय कर लिया था। मगर दूसरे ही क्षण वह सोचने लगी कि कहीं नीरज मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहा। यदि मैं वहां अपने आप पहुंच गई तो हमेशा वह मेरी हंसी उड़ाएगा और कहेगा कि आखिर तुमको स्वयं ही आना पड़ा। मेरे बिना रह नहीं सकीं। बहुत कहती थी कि जब तक तुम मुझे लेने नहीं आओगे। तब तक नहीं आऊंगी। इस तरह के विचार आने के बाद उसका मन बदल गया और उसने नीरज के पास जाने का विचार छोड़ दिया। नीरज ने तलाक देने की बात कही थी। उसे भी उसने धमकी समझ कर अनसुना कर दिया। वह दोनों एक दूसरे को इतना अधिक चाहते थे कि उसे नीरज द्वारा सुरेश से कही हुई इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह उसे तलाक दे सकता है।

दिमाग में चल रही उठापटक के बाद उसने स्वयं पर काबू पा लिया और बहुत सोच-विचार के बाद उसने अपने भाई सुरेश को आवाज दी व सुरेश से पूछने लगी कि कहीं नीरज ने मजाक में तो तुमसे सब कुछ नहीं कहा। सुरेश कहने लगा कि दीदी मैंने भी यही सोचा था कि जीजू मजाक कर रहे हैं। अतः अपने संदेह को दूर करने के लिए मैंने छिपकर उनका पीछा किया। वे दोनों अपने घर के अंदर गए। मैं कई घंटों तक वहीं खड़ा होकर घर की ओर देखता रहा। मगर रात में भी वह लड़की घर से बाहर नहीं आई। सुरेश की इस बात ने रचना को अंदर तक तोड़ डाला वह मन ही मन बड़बड़ाने लगी कि नीरज ने ठीक ही तो किया।

आखिर वह क्या करता उसे भी एक सहारे की जरूरत थी। जब मैंने उसका साथ नहीं दिया तो वह विवश हो गया होगा। हो सकता है कि वह जल्दी ही तलाक के कागज भेज दे। मुझे अब अपनी जिद छोड़नी होगी।

नीरज के पास देने को अधिक कुछ नहीं था। बस एक छोटा सा घर था। मामूली सी नौकरी थी। मगर वह दोनों अपने छोटे से संसार में खुश थे। एक दूसरे का प्यार उनका संबल था। छुट्टी के दिन दोनों साथ-साथ खूब घूमते फिरते और प्रसन्न रहते थे। नीरज अपना सारा वेतन रचना के हाथों में रख देता था। घर का खर्चा उसे ही चलाना पड़ता था। कोई रोक टोक नहीं थी। एक दिन रचना के पिताजी रचना से मिलने आए। दो दिन तक उन लोगों के पास रुके। शाम को घर पर आते ही अचानक नीरज रचना पर बरस पड़ा। कहने लगा कि तुम्हारे पिताजी अपने आप को क्या समझते हैं। उन्होंने मेरी बेइज्जती की है। मैं उन्हें एक क्षण भी बर्दाश्त नहीं कर सकता। रचना कुछ भी समझ नहीं पा रही थी। उसकी बोलती बंद हो गई थी। इसी समय रचना के पिताजी वहां आकर कहने लगे कि सच्चाई सामने आ गई तो क्रोध आ रहा है। मेरी बेटी भोली भाली है। वह तुम्हारी चालबाजियाँ नहीं समझ सकती है। तुम उसके साथ कैसा नाटक खेल रहे हो। मैं तो तुम्हें भला आदमी समझता था। इसी कारण मैंने तुम दोनों की शादी करने की अनुमति दे दी थी। असल में नीरज और रचना का प्रेम विवाह हुआ था।

रचना की समझ में कुछ नहीं आ रहा था पिताजी के मुँह से अजीबोगरीब बातें सुनकर नीरज अपने क्रोध पर काबू नहीं कर पा रहा था। स्वयं पर नियंत्रण रखते हुए रचना ने वास्तविकता जानने के लिए नीरज से पूछा कि आखिर हुआ क्या है। मुझे भी तो बताओ। नीरज ने कहा कि वह अपने ऑफिस में काम करने वाली एक लड़की सुमन के साथ कैंटीन में चाय पी रहा था। उसी बीच पिताजी वहां आ गए और हम दोनों पर तरह-तरह के लांछन लगाते हुए अपमानित करने लगे। मेरी इज्जत मिट्टी में मिला दी। कैंटीन के लोग तमाशा देख रहे थे। उस समय से सुमन लगातार रोए जा रही है। रचना के पिताजी कहने लगे कि आरोप नहीं लगाया बल्कि अपनी आंखों से मैंने देखा। दोनों किस तरह बैठकर हंस-हंसकर आपस में बातें कर रहे थे। इन दोनों को देखकर इनकी घनिष्ठता और नज़दीकियां समझ में आ रही थी। इन दोनों को हंसता हुआ देखकर मैं बर्दाश्त नहीं कर सका। रचना की समझ में सब आ गया था। उसने नीरज को समझाया कि पिताजी पुराने विचारों के हैं। यदि उसी समय आप पिताजी को शांति पूर्वक समझा देते कि ऐसा कुछ नहीं है, जैसा वह समझ रहे हैं तो पिताजी अपनी गलती समझ जाते। रचना सारी गलती नीरज की बताकर उसे कहने लगी कि वह पिताजी से क्षमा मांग कर इस विवाद को यहीं समाप्त कर दें। नीरज ने इस बात को नहीं माना। उधर पिताजी क्षण भर के लिए भी वहां नहीं रुकना चाहते थे। रचना ने नीरज से कहा कि यदि वह पिताजी से क्षमा नहीं मांगेंगे तो वह इस घर में नहीं रहेगी। पिताजी के साथ चली जाएगी। पिताजी की खुशी के लिए रचना उनके साथ अपने मायके चली गई। कुछ दिन पश्चात नीरज को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने क्षमा मांगते हुए रचना से वापस आने के लिए आग्रह किया। अब रचना अपनी जिद पर अड़ गई थी कि जब तक नीरज उसे स्वयं लेने नहीं आएंगे और पिताजी से क्षमा नहीं मांगेंगे। तब तक वह वापस नहीं आएगी। कैंटीन वाली बात रचना की समझ में आ गई थी। वह जानती थी जिसमें नीरज पर पिताजी ने व्यर्थ ही दोषारोपण किया है। दोनों ऑफिस में साथ काम करते हैं। चाय पीने साथ आ गए। तो इसमें कुछ गलत नहीं था। पिताजी ने संदेह करके बस बखेड़ा खड़ा कर दिया। रूढ़िवादी और पुरानी विचारधारा के मेरे पिताजी को उन्हें हंसी मजाक करते देखकर गलतफहमी हो गई होगी। नीरज तो मेरे सिवा किसी और की कल्पना भी नहीं कर सकता। रचना सोचने लगी कि सुरेश जो समाचार लाया था। उसका क्या मतलब था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था एक मन कहता कि ऐसा नहीं हो सकता और दूसरा कहता कि सब कुछ संभव हो सकता है। उसने नीरज की उपेक्षा की शायद इसी कारण नीरज ने ऐसा किया हो। वह दूसरी महिला कौन हो सकती है, जिसे नीरज के साथ सुरेश ने देखा था।

रचना को अपने ऊपर क्रोध आ रहा था। क्योंकि जो कुछ हुआ उसी के कारण हुआ। उसी की जिद की वजह से हुआ। सुरेश अपने काम से बाहर गया था। उसे नहीं पता था कि वह वहीं से अचानक इतनी अप्रत्याशित खबर लेकर आएगा। रचना ने निर्णय किया कि वह स्वयं नीरज के पास जाकर वास्तविकता जानेगी। वहां जाकर ही मालूम हो सकेगा कि नीरज ने यह सब क्यों किया। अगले दिन रचना ने पिता जी से कहा कि वह नीरज के पास जा रही है। उसके पिताजी उसे अजीबोगरीब नजरों से देखने लगे। मगर उन्होंने उसे जाने से रोका नहीं। उसके मस्तिष्क में यात्रा के दौरान अनगिनत प्रश्न उठ कर उसे बेचैन करते रहे। शाम को वह अपने पति के घर पहुंची। धड़कते दिल से उसने दरवाजे पर दस्तक दी।

दरवाजा एक महिला ने खोला और रचना से बोली आखिर आप आ ही गई। नीरज की आपने कड़ी परीक्षा ली। नीरज तो अपनी परीक्षा में सफल हो गया। मगर तुम्हें असफलता मिली। मुंह की खानी पड़ी। यह सुनकर रचना की आंखों में आंसू आ गए और वह उनका चरण स्पर्श करते हुए कहने लगी कि भाभी आप भी ऐसा सोचती है भाभी ने नीरज को आवाज लगाई और उनकी आवाज सुनकर नीरज तुरंत बाहर आया। दोनों ने एक दूसरे को देखा और हंसने लगे। रचना की समझ में कुछ नहीं आया। नीरज कहने लगा भाभी आपकी चाल सफल रही। सुरेश सचमुच आपको पहचान नहीं पाया और उसने हमारी बातों को सही समझ कर इसे सब कुछ बता दिया। तभी तो मैडम दौड़ी-दौड़ी आ गई। यह सुनते ही रचना को झटका लगा। उन दोनों को हंसता हुआ देखकर रचना खिसयानी हंसी हंसने लगी और शर्माते हुए उसने अपनी गर्दन झुका ली। भाभी कहने लगी की रचना तुमने ऐसे कैसे समझ लिया कि निक्की तुम्हें छोड़कर किसी और से शादी कर लेगा। सुरेश की एक छोटी सी गलती के कारण रचना को अपनी गलती का एहसास हुआ और सुधारने का मौका मिला।

नारी शक्ति का प्रादुर्भाव

- भरत चतुर्वेदी, (पुरा/भोपाल)

संपूर्ण संसार में महिलाओं में जागृति आ रही है अर्थात महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त हो रहे हैं। उसका सर्वांगीण विकास हो रहा है। वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। चाहे सिनेमा जगत, खेल के मैदान, शिक्षा का क्षेत्र, अंतरिक्ष या हवाई जहाज चालन हो। वह अब इन सब प्रतिस्पर्धा में बराबरी से भाग ले रही है। कहने का तात्पर्य है कि महिला वह सब कार्य जिम्मेदारी के साथ निर्वहन कर रही है। यह सब नारी की स्वतंत्रता केवल प्रजातंत्र में विश्वास रखने वाले राष्ट्रों तक ही सीमित है। अभी तक कई रूढ़ीवादी व दकियानूसी विचारों वाले पुरुष इसे स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। वे आज भी 100 वर्ष पूर्व के विचार मन में रखकर नारी स्वतंत्रता के विरोधी हैं।

हमारे देश में सदैव नारी को बराबरी का दर्जा प्राप्त होने के साथ ही समाज में उसका सम्मान होता रहा है। मनुस्मृति में कहा गया है कि यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमते तत्र देवता अर्थात जहां नारी की पूजा होती है। वहां देवताओं का निवास होता है। हिंदू समाज में अनादि काल से कोई भी धार्मिक कार्य व मांगलिक कार्य बिना पत्नी के संपन्न नहीं होता है। यह परंपरा आज भी कायम है। हमारे यहां नारी की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता था। गार्गी मैत्री इसके सर्वोत्तम उदाहरण है। इसके अलावा भी अनेक विदुषी महिलाएँ देश में हुई हैं।

हमारे यहां नारी पूर्ण स्वच्छंदता के साथ निर्भीक होकर विचरण करती थी। हमारे देश में भगवान के संबोधन के पूर्व उनकी सहधर्मिणी का पहले उल्लेख होता था जैसे लक्ष्मी-नारायण, सीताराम, राधा कृष्ण, गौरी शंकर। गुरूकुल में गुरु के साथ रहने वाली गुरु पत्नी भी शिक्षित होती थी। हमारे यहाँ विवाह अन्य मतावलंबियों की भांति कॉन्ट्रैक्ट या अनुबंध ना होकर जन्म जन्मांतर का बंधन मानकर शादी की जाती थी। हमारे देश में गुलामी के समय अर्थात मुगल काल में महिलाओं पर प्रतिबंध लगाए गए उनकी सुरक्षा हेतु। उनका घर से निकलना बंद हो गया। क्योंकि घर से उनके निकलने पर जबरन महिलाओं को उठा ले जाना। उनके साथ दुराचार,अत्याचार व अन्य तरह अनहोनी की संभावनाएं ज्यादा थी। स्त्रियों में इसीलिए पर्दा प्रथा प्रारंभ हुई। उनकी शिक्षा पर भी रोक लगाई गई। केवल घर पर रहकर ही उन्हें साक्षर बनाया जाने लगा। बाल विवाह प्रारंभ हो गए। जबकि हमारे समाज में नारी को अपना पति तक चुनने का अधिकार था। हमारे देश में सीता स्वयंवर, द्रौपदी का स्वयंवर तथा अंतिम स्वयंवर संयोगिता का हुआ है। इसके पश्चात मुगल काल में हमारी समस्त परंपराएँ ध्वस्त हो गई।

आधुनिक भारत में अर्थात अंग्रेजों के शासन काल में पुनः महिलाओं को शिक्षा देना प्रारंभ हुआ। इसी कालखंड में राजा राममोहन राय ने समाज में व्याप्त कुरीतियां सती प्रथा के विरुद्ध आवाज बुलंद की। जिसके सकारात्मक परिणाम आए। इसी प्रकार स्वामी दयानंद जी के नारी जागृति में भी सकारात्मक परिणामों के फलस्वरुप महिलाएं शिक्षित होकर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर परिवार चलाने में योगदान देने लगी। आजादी के आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। वे जनप्रतिनिधि भी बनने लगी अर्थात चुनाव लड़कर जीतने भी लगी। वे जीवन के सभी क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभाने लगी वर्तमान समय में महिलाएं घर गृहस्थी की मुखिया बन चुकी है। पूर्व में संयुक्त परिवार का मुखिया पुरुष ही होता था। इस भागमभाग की दुनिया में तथा औद्योगिकीकरण के कारण हमारे संयुक्त परिवार छिन्न-भिन्न हो गए तथा अब एकल परिवार ही रह गए हैं। मुश्किल से 15 से 20% परिवार ही संयुक्त परिवार रह गए हैं। संयुक्त परिवार के बिखरने व एकल परिवार की महत्ता के दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं। आधुनिक शिक्षा पद्धति हमें डिग्री होल्डर तो बना रही है। हम उच्च शिक्षा प्राप्त कर बड़ी-बड़ी डिग्रियां प्राप्त कर रहे हैं। परंतु हममें से अधिकांश लोग विवेक शून्य व मतलब परस्त हो गए हैं। अपने पैतृक स्थान व परिवार के सदस्यों से दूर हो रहे हैं। तथा बहुत बड़ी संख्या में हमारे समाज के वन्धु व उनका परिवार अपने ससुराल पक्ष के प्रति ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं। हमारे समाज की सगाई समस्या व विवाह के पश्चात दोनों परिवारों के झगड़े, मारपीट तथा कोर्ट कचहरी तक पहुंच रहे हैं। घरों पर आने वाले वैवाहिक आमंत्रणों में विजाती शादी के अधिक कार्ड रहते हैं तथा अपने समाज में संपन्न हुए आधे विवाह में एक तिहाई विवाह टूट रहे हैं।

यह हमारी समाज के लिए विशेषकर नारी शक्ति के लिए इसका निदान चिंतनीय तो है ही। हमारे समाज में यह दो बातें वर्षों से अपने परिवार की बुजुर्ग महिलाओं से सुना करते थे लड़की की डोली माँ के घर से व अर्थी ससुराल से उठती है। इसी प्रकार यह कहावत भी प्रचलित है कि जो बहुएं पराए घर से आई, राखी नो पलक की नहीं

परंतु अब यह दोनों कहां हो तो का कोई अर्थ नहीं रहा है ना

नहीं बहू की मायके वापसी कई परिवारों में बहू पर अत्याचार, मृत्यु तक के समाचार मोबाइल पर प्राप्त होते रहते हैं। कई बार लड़की की माँ, मौसी या चाची अपनी लड़की जो दूसरे की घर की बहू बन चुकी है उसी की ससुराल लड़ने चली जाती है। क्या यह उचित है इस पर हम सब विचार करें। हमारे समाज में नाई सगाई कर आता था। समाज उसे स्वीकार कर लेता था। घर का मुखिया या बड़ा बुजुर्ग पक्काएत ले लेता था। उसे संपूर्ण परिवार स्वीकार कर लेता था। अब सगाई पुत्र या पुत्री की माँ ही कर पाती है। खूब लड़की देखी जाती है। मौसी तक देखती है। फिर भी विवाह के बाद झगड़े हो रहे हैं। लड़के की जन्मपत्री मुश्किल से दी जाती है। पता किया जाता है कि उस का पैकेज क्या है। रहता कैसे हैं, कौन-कौन लोग उसके साथ रहते है तथा लड़के वाले पर्याप्त दहेज का आकलन करते हैं। ऐसा देखा जा रहा है। मेरा निश्चित मत है कि कोई भी लड़का दहेज लोभी नहीं है। वह नाहक बदनामी झेलता है। महिलाओं का परिवार पर वर्चस्व बढ़ने के बाद तथा हम अधिक शिक्षित होने के बाद बावजूद यह झगड़े घर में क्यों बढ़ रहे हैं। हमारी सहनशीलता या संवेदनशीलता समाप्त हो रही है। छोटी-छोटी बातों पर अनबन कर लेते हैं। बोलचाल,संवाद बंद कर देते हैं जबकि बातचीत करने से ही अधिकतर समस्याओं का निदान हो जाता है।

संयुक्त परिवार में बुजुर्ग लोग बैठकर समस्याओं का निदान करते थे। लड़के व बहू को समझा देते थे। संयुक्त परिवार बिखरने से समस्या का निदान करने वाला कोई नहीं रहा। जब बहू घर में आती थी, तो वह ससुराल में ही रम जाती थी। परिवार के लोग भी उसका सम्मान रखते थे व उसकी चिंता करते थे। ऐसी स्थिति में हमारी कार्यकारिणी की महिलाओं को समाज में अपनी भूमिका का निर्वहन करना चाहिए एवं सभी परिवारों में घर की अन्नपूर्णा के मत का विशेष प्रभाव होता है। हमारी प्यारी बेटी दूसरे की बहू बनकर प्यारी क्यों नहीं रह पाती? यह बड़ा चिंतनीय प्रश्न है। इस पर हमको अवश्य विचार करना चाहिए।

आग्रह

चतुर्वेदी चंद्रिका का सदा हमारे समाज में केंद्रीय रूप से हर मीटिंग हर मंच पर चर्चा का विषय होती है। विगत कुछ समय में एक बड़ा रोचक अनुभव हुआ है चतुर्वेदी चंद्रिका ना पहुंचने की शिकायत अमूमन आ ही जाती है। जिसे हम लोग समय रहते दूर करने का प्रयास करते हैं। लेकिन बड़े आश्चर्य की बात है कि चतुर्वेदी चंद्रिका पहुंचने के उपरांत उसको अनेक लोग खोलकर पढ़ने का भी कष्ट नहीं करते लेकिन पत्रिका ना प्राप्त होने पर शिकायत अवश्य करते हैं। चतुर्वेदी चंद्रिका का प्रकाशन में व्यवस्थापक के रूप में जुड़े होने के कारण मुझे यह अनुभव हुआ है कि पत्रिका हमें ड्राइंग रूम में रखना अच्छा लगता है परंतु उसे खोलकर लेखों की अच्छाई, लेखक की मेहनत प्रयास उसकी सराहना कभी नहीं करते। पत्रिका तैयार करने में एक टीम द्वारा समाज में समय देते हुए निस्वार्थ व निशुल्क सहयोग किया जाता है। पत्रिका छपी नहीं, छपी कि नाय, कम छपी, हमारा मेटर नही छापा, उनका क्यों छापा तरह-तरह के व्यंग, ताने, शिकायतें यह सब तो पत्रिका ना आने पर दिए जाते हैं। कई लोग तो बड़ी शान से बताते हैं कि पत्रिका हमारे पास हर माह आती है लेकिन हमें उसे खोलकर देखने का वक्त नहीं मिलता पर एक माह ना आने पर शिकायत तुरंत की जाती है। पीडीएफ में पत्रिका देश और विदेशों तक में निरंतर पहुंच रही है। हमारे समाज द्वारा प्रतिक्रिया नकारात्मक तो अवश्य होती है। सकारात्मक की सदा कमी होती है। अतः यह मानकर चला जाता है कि नो न्यूज़ मतलब गुड न्यूज़। परंतु ऐसे व्यवहार से लेखकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है व उनमें निराशा के भाव उत्पन्न होते हैं। हमारे कुछ बांधव यह तो कह देते हैं की आजकल फलाने के बड़े लेख छप रहे हैं। ऐसे लेख देना कौन सी बड़ी बात है। हम भी लिख सकते हैं। परंतु वे लोग आज भी कॉपी पेस्ट से आगे नहीं बढ़ पाए हैं। लेकिन कभी पत्रिका के प्रकाशन के संबंध में हमारा समाज किसी भी तरह की अभिव्यक्ति व्यक्त नहीं करता यह बड़ा दुर्भाग्य है। लोग यह तो लिख देते हैं की पत्रिका समय पर छप रही है। कलेवर, उसकी प्रकाशन सामग्री के बारे में नहीं लिखते। लेखक के लेख कैसे लगे और किसके लेख आदि देखना/पड़ना चाहते हैं या कभी प्रकाशन हेतु लेख बहुत कम मात्रा में भेजते हैं। अतः पत्रिका को सहयोग करने हेतु अच्छे लेखों की ज्यादा आवश्यकता रही है।

आपके विचार समाज का दर्पण है। अतः आप सभी से निवेदन है कि आप अपने लेख, कविताएं, रचनाएं व अन्य प्रकाशन सामग्री भेजने का कष्ट करें। जिन्हें हम लोग यथासंभव,समयानुकूल शीघ्रता से प्रकाशन कर सके। आप अपने सुझाव व पत्रों से भी पत्रिका के स्वरूप को सुधारने हेतु सुझाव देकर अवगत कराएं।

रियायती दरों पर पत्रिका का वितरण डाक विभाग के अंतर्गत आता है अतः पत्रिका ना प्राप्त होने की दशा में एक बार अपने निकटतम पोस्ट ऑफिस में लिखित शिकायत अवश्य दर्ज कराएं कोरोना काल के कारण अभी डाक वितरण की व्यवस्था अनियमित चल रही है मुख्य रूप से स्पीड पोस्ट व रजिस्टर्ड डॉक का ही वितरण हो रहा है यथासंभव वह साधारण डाक को भी बांट रहे हैं, लेकिन इन परिस्थितियों में देरी होना लाजमी है। अतः इसके लिए सर्वप्रथम लोकल स्तर पर जानकारी कर सहयोग करें।

व्यवस्थापक : चतुर्वेदी चंद्रिका

चिंतन

हमारा समाज

- सौरभ चतुर्वेदी (फरौली/लखनऊ)

कोई भी समाज ताकतवर तब होता है। जब वह संघटित होता है। संगठित तब हो पाता है। जब उसको ईमानदार नेतृत्व मिले। ईमानदार नेतृत्व तब मिलता है। जब समाज की मातृसंस्था मजबूत हो। मुगल काल की विभीषिका अत्याचार, विध्वंस को लगभग सात सौ सालों तक झेलते झेलते जिस प्रकार से सनातनी संस्कृति का क्षरण हुआ। सनातनी तेज विलुप्त होने लगा। संस्कृति कमजोर पड़ गई। इतनी कि लगा अब अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। तब कुछ ऐसे संगठन अस्तित्व में आये जैसे ब्रहम समाज, आर्य समाज, रामकृष्ण मिशन, संघ जिन्होंने सनातनी संस्कृति के पुनरुद्धार को अपना लक्ष्य बना लिया। इन सब संगठनों ने सनातन संस्कृति को एक नई ऊर्जा प्रदान की। आज हम सब गर्व के साथ सीना तानकर दुनिया के सामने खड़े हो पाये। वह इन सभी संगठनों के सामूहिक सुप्रयासों का परिणाम ही तो है। इसी तरह से हमारे पूर्वजों ने भी यह विचार किया कि एक ऐसा संगठन बनाया जाय। जो अपने माथुर चतुर्वेदी समाज को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करे। अपनी परंपराओं और रीति-रिवाजों को अक्षुण्ण बनाए और कुरीतियों पर प्रहार कर समाज सुधार का कार्य भी कर सके।

इसमें सबसे ऊपर नाम आता है, मैनपुरी के दम्मीलाल जी और इटावा के जगन्नाथ पांडे जी का। समाज सदैव इनका ऋणी रहेगा। इन्होंने सर्वप्रथम रविवारीय, साप्ताहिक बैठकों का शुभारंभ किया। इन बैठकों का उद्देश्य था समाज में जातीय सुधारों में गति प्रदान करना।आपस में मेल-मिलाप को बढ़ावा देना। यह बैठकें ही भविष्य में महासभा का रूप ले लिया। उस समय यह किसी ने भी नहीं सोचा था, समाज के लिए एक केन्द्रीय संस्था गठित हो इस कार्य के लिए सन 1915 से जोरदार प्रयास शुरू हुये। कई बैठकों और प्रयासों के फलस्वरूप 15 मार्च 1920 को महासभा का विधिवत पंजीकरण हो गया।प्रथम अधिवेशन भी दिसंबर 1920 को मथुरा में हुआ। 1920 में रोपा गया पौधा आज 2020 आते आते एक विशाल वटवृक्ष का रूप ले कर पूरे समाज को अपनी शीतल छाया में आच्छादित कर रहा है। यह हम सबके लिए गर्व की बात है। महासभा द्वारा समय-समय पर समाज सुधार के लिए व्यापक कदम उठाए गए। द्वितीय अधिवेशन जो सितंबर 1922 को मैनपुरी में संपन्न हुआ। जिसमें जरुरत मंद विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति तथा समाज की कुरीतियों में सुधार लाने पर जोर दिया गया। पंचायत स्थापित की गई। मासिक चंदा भी तय किया गया। समय समय पर महासभा ने अनेकों कार्य ऐसे किये जिनका महत्त्व आज हम सभी समझ रहे हैं। मुझे सबसे उल्लेखनीय कार्य जिसने मुझे भी सर्वाधिक प्रभावित किया, वो यह लगा जब ग्वालियर में महासभा का छठवां अधिवेशन आयोजित किया गया। दिसंबर 1927 को। जिसमें डिप्टी साहब राधेलाल जी,होलीपुरा को अध्यक्ष बनाया गया। वो एक निर्भीक व्यक्तित्व थे, समाज-सुधार के लिए प्रतिबद्ध। मृतक संस्कार में अपव्यय रोकना, विवाह के दिनों में कटौती उन्ही की देन है। समाज उनका हमेशा ऋणी है। बाल-विवाह और गौना समाप्त कर इन्होंने अपनी महती भूमिका से समाज का समर्थन हासिल किया। इन्होंने अपनी पुत्री का विवाह आगरा में एक दिन में संपन्न कर रुढ़िवादियों पर जबरदस्त प्रहार किया। विरोध इतना हुआ कि इनकी पत्नी तक ने विवाह में शामिल होने से इंकार कर दिया पर वे अविचल रहे। उनके पास धन दौलत की कोई कमी नहीं थी पर समाज हित को सर्वोपरि माना। उनकी इसी दूरदर्शिता का लाभ समाज आज भी ले रहा है। इसी तरह समय समय पर महासभा अनेक कार्य समाज-सुधार के लिए करती रही है जो आज भी जारी है , आज महासभा विधवा सहायता, छात्रवृत्ति, अन्नपूर्णा योजना, चिकित्सा सहायता आदि के द्वारा समय-समय पर अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए समाज के साथ कदम मिलाकर खड़ी हुई है। बहुत अफसोस होता है कि इतना सब कुछ करने के बाद भी कुछ बांधव महासभा पर अंगुली उठाते हैं। लोगों को महासभा से शिकायत ही यही है कि महासभा करती क्या है, वो यह सोचते ही नहीं कि महासभा और समाज क्या अलग-अलग हैं, समाज भी तो हम आपसे मिलकर बनता है, हमारे बगैर यह समाज भी तो अमूर्त ही तो है,हम सब समाज के अंग हैं। अब कोई पूछे कि दिमाग क्या करता है, हाथ-पैर क्या काम करते हैं तो इस पर यह समझना भी जरूरी है। अगर हाथ पैर और दिमाग अलग-अलग कर दिये जाय तो शरीर अस्तित्व हीन हो जायेगा। इसीलिए जब हम महासभा से पूछते हैं कि सभा क्या कर रही है तो हकीकत में हम अपने आप से पूछते हैं कि हम क्या कर रहे हैं,सवाल का जवाब इस में समाहित है।

अंत में मैं यही कहना चाहूंगा कि हम आप समय काल और परिस्थिति को ध्यान में रखें। महासभा हमारी मातृ संस्था है। इस पर सवाल उठाने वाले यह क्यों नही सोचते इस महासभा को वटवृक्ष बनाने में हमारे पूर्वजों ने अपना खून-पसीना, जवानी सब न्यौछावर कर दी। आक्षेप लगाना संसार का सबसे सरल काम है। किसी पर भी कभी भी लगाया जा सकता है। पर ध्यान रहे कि कोई ऐसा कार्य न होने पाएं जिससे स्वर्ग में बैठे हमारे पूर्वजों की आत्मा अशांत हो जाय। कमी हर किसी में है। पर निजी स्वार्थ को अपने ऊपर हावी नहीं होने दें। जो स्वप्न हमारे पूर्वजों ने महासभा की स्थापना करते समय देखा था। उसे खंडित करने का पाप अपने सर पर नहीं लें।

हम सब एक ही है, एक ही रहे।

सुख-दुख का सहोदर मोबाइल

- श्रीमती उषा भरत चतुर्वेदी

जी हां मैं एक मोबाइल हूँ। आज हर हाथ पर मेरा कब्जा है। मैं छोटा बड़ा मोटा पतला सस्ता महँगा सभी रंग और सभी आकार में मिलता हूँ। मेरी भी उप जातिहैं।4G5G3G है। मैं वर्तमान दुनिया का अलादीन का चिराग उंगली चलाते ही गूगल नाम का जिन उपस्थित हो जाता है। बोलो मेरे आका क्या हाजिर करुँ। आप रख दीजिए अपनी बात हर बात का जवाब हाजिर हो जाएगा। कोई टेंशन नहीं लेने का सारी जानकारियां यह अलादीन का चिराग देता रहेगा। और अधिक जानकारियां चाहिए तो खुल जा सिम सिम है वह आपको अवांछित जानकारियां दे देगी। मगर अपने नाबालिग बच्चों के सामने खुल जा सिम सिम मत खोल लेना, आगे आपके बच्चों के जीवन के लिए नुकसानदायक रहेंगी। पहले मेरे एक और सहोदर भाई ने कंप्यूटर ने सारी दुनिया को एक कमरे में समेट कर रख दिया था एक छोटा सा माउस सारी दुनिया की जानकारी समेटकर आपके सामने प्रस्तुत कर देता था। अब मैं उसका बड़ा सहोदर हूँ। और आप के साथ हमेशा उपलब्ध रहता हूँ दिन हो या रात, घर में हो या बाहर हरदम साथ रहता हूँ।

मेरा उपयोग यदि आपने अपनी पत्नी के सामने आवश्यकता से अधिक कर लिया तो समझ लो आपका झगड़ा होना निश्चित है।

दिनभर इसी में घुसे रहते हो कभी घर गृहस्थी की खबर भी लिया करो'

हाथ का कौर मुंह में रख लो कब से लेकर बैठे हैं बाद में बात कर लेना'

जब इस दोस्त से फुर्सत मिल जाए तो हमसे बात कर लेना

यह बातें आपको रोज सुननी पड़ती है मगर इसके बाद भी आप मेरा उपयोग कम नहीं करते।

दुनिया में मेरा उपयोग 25 साल पहले होने लगा था। भारत कौन पीछे रहने वाला है भारत में भी 20 साल पहले मैं आ गया हां इतना जरूर है कि मेरे अत्यधिक प्रयोग और दुरुपयोग के मामले में हम भारतवासी सबसे आगे हैं।

जब भी अर्थव्यवस्था की बात आती हम शुरू से यही बात पढ़ते चले आ रहे हैं, भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की 90 परसेंट जनता कृषि और कृषि पर आधारित उद्योग धंधों पर निर्भर है। अब एक बात और जोड़ दीजिए भारत की 70 परसेंट जनता मोबाइल धारक है। मैं विभिन्न एपों के कारण उपयोगी सिद्ध हो रहा हूँ। लॉकडाउन और कोरोना की महामारी के कारण आज भारत की नई पौध को मैं ही शिक्षित कर रहा हूँ। मेरे कारण ही वह शिक्षा से जुड़े हैं यह अलग बात है कि कितना समझ पा रहे हैं या कितना लोग समझा पा रहे हैं।

इस ऑनलाइन पढ़ाई से सबसे ज्यादा किसी को कष्ट है तो मातृशक्ति को है। बच्चे मुझे छोड़ते नहीं है। बच्चों की पढ़ाई चल रही है मम्मी की चैटिंग रुक गई है सखियों की खट्टी मीठी बातें बंद हो गई है। मगर वह भी मजबूर है इस महंगाई के जमाने में कितना मुझे खरीदें।

कुछ खुराफाती दिमाग वाले बच्चे ऑनलाइन के नाम पर बैठकर गेम खेलते हैं मम्मी आधा घंटा और क्लास चलेगी, तभी मोबाइल दे पाऊँगा।

लॉकडाउन में जब दुनिया थम सी गई समय रुक गया उस समय में ही काम आया। मैंने आवश्यक का कार्य रुकने नहीं दिए धन्यवाद देने वालों ने धन्यवाद दिया जिनके पास नहीं था उन्होंने कोसा।

आपसे मैं एक बात पूछता हूँ जब मैं नहीं था तब आप दूर देश में बैठे अपने लोगों से आमने सामने बैठ कर बात कर पाते थे ऑफिस की जरूरी मीटिंग है हो पाती थी हुआ ना मेरे कारण। आज गूगल मीटिंग है जूम मीटिंग है के सहारे ही सारे काम चल रहे हैं। मगर भाई थोड़ा सा मुझे भी विश्राम दिया करो। इसके दो लाभ होंगे मैं अपना भोजन ग्रहण कर लूंगा और आपकी आंखों को सुकून मिलेगा।

जहान में जो आया है वह सर्वगुण संपन्न हो कि नहीं आया गुण और दोष दोनों होते हैं यदि सभी गुण हो जाएं हम ईश्वर बराबर हो जायेंगे।

इसलिए खुशी खुशी में अपनी कमियां कबूल कर रहा हूँ। बिना मांगे सलाह देना सभ्यता और मर्यादा के विरुद्ध लेकिन नई पौध को दिशा देने के कारण अपनी मर्यादा छोड़ने पड़ रही है। दो बातों का ख्याल रखो

1) समय

2) सामग्री

मुझे कितने समय तक अपने साथ रखना है इसका संतुलन बनाना पड़ेगा क्योंकि अधिक समय तक साथ रखने से आपके शारीरिक क्षमता का क्षय होगा। कैंसर और ट्यूमर जैसी बीमारियां भी हो सकती हैं। ऐसा शोधकर्ताओं का कहना है। आंखें तो कमजोर होती हैं जगजाहिर।

दूसरा सामग्री

मेरी किस सामग्री का प्रयोग करना है बस उसी का प्रयोग कीजिए जो आपके लिए उपयोगी हो खुल जा सिम-सिम या अलादीन के चिराग को घिसकर जिन को मत बुलाना, हाजिर हूँ आका, क्या सेवा करूं। कुछ अवांछित बुराइयां मेरी छुपी ही रहने दो। यदि मैं आपके हाथ में एक तलवार के रूप में हूँ, तो दूसरे हाथ में ढाल के रूप में विवेक एवं संयम होना चाहिए।

कहीं मेरा दुरुपयोग किशोर वय के बच्चे बच्चियों और युवक-युवतियों को नुकसानदायक ना हो आग गर्मी देती है, लेकिन चूल्हे में हाथ डालोगे तो हाथ जलेगा ही फिर आप को दोष देना कहां तक उचित है।

एक नया चलन और आ गया अब लोगों को मुझे हाथ में रखना भी भारी पड़ने लगा क्योंकि सारे काम निकल रहे हैं तो अब कीमत कम हो रही है। पटक दिया जेब में

और कान में लगा लिया ईयर फोन , इससे जो खतरे हैं उनका दोष भी मेरे ऊपर मढ़ा जाता है।

दोनों कान बन्द है, किसी तरह की आवाज सुनाई नहीं पड़ रही मस्ती में गाना सुनते चले जा रहे हैं। पीछे से किसी गाड़ी ने ठोक दिया शुरू हो गई मेरे ऊपर आरोपों की बौछार।, गरीब की लुगाई सब की भौजाई मेरा हाल तो वह है। मेरा प्रयोग करो मेरे लाभ लो मगर कहीं ना कहीं सावधानियां भी प्रयोग करो अन्त में इतना ही कहता हूँ जैसा हूँ आपके हाथ में हूँ।

अति हर चीज की बुरी होती है

अति का भला न बोलना अति की भली न चुप

अति का भला न बरसना आज की भली न धूप।

बात यहीं समाप्त नहीं हुई है और नए ऐप ओके साथ आपके सामने फिर आऊँगा।

आपके हरदम साथ आपका सुख दुख का साथी

आपका अपना मोबाइल

निवाला

- अतुल चतुर्वेदी (मैनपुरी/ लखनऊ)

जिंदगी भी हर क्षण परीक्षा लेती है, उस रात भी एक उधेड़बुन के कारण सो नहीं सका।

बमुश्किल सुबह एक रोटी खाकर, घर से अपने शोरूम के लिए निकला।

आज किसी के पेट पर पहली बार लात मारने जा रहा हूँ।

ये बात अंदर ही अंदर कचोट रही है।

ज़िंदगी में यही फ़लसफ़ा रहा मेरा कि, अपने आस पास किसी को, रोटी के लिए तरसना ना पड़े,

पर इस विकट काल मे अपने पेट पर ही आन पड़ी है।

दो साल पहले ही अपनी सारी जमा पूंजी लगाकर कपड़े का शोरूम खोला था,मगर दुकान के सामान की बिक्री अब आधी हो गई है। अपने कपड़े के शोरूम में दो लड़के और दो लड़कियों को रखा है मैंने ग्राहकों को कपड़े दिखाने के लिए। लेडीज डिपार्टमेंट की दोनों लड़कियों को निकाल नहीं सकता। एक तो कपड़ो की बिक्री उन्हीं की ज्यादा है, दूसरे वो दोनों बहुत गरीब हैं। दो लड़कों में से एक पुराना है, और वो घर में इकलौता कमाने वाला है।

जो नया वाला लड़का है दीपक, मैंने विचार उसी पर किया है। शायद उसका एक भाई भी है, जो अच्छी जगह नौकरी करता है और वो खुद तेजतर्रार और हँसमुख भी है। उसे कहीं और भी काम मिल सकता है।

इन सात महीनों में मैं बिलकुल टूट चुका हूँ।

स्थिति को देखते हुए एक वर्कर कम करना मेरी मजबूरी है।

यही सब सोचता दुकान पर पहुंचा। चारो आ चुके थे, मैंने चारो को बुलाया और बड़ी उदास हो बोल पड़ा..

देखो, दुकान की अभी की स्थिति तुम सब को पता है, मैं तुमसब को काम पर नहीं रख सकता

उन चारों के माथे पर चिंता की लकीरें, मेरी बातों के साथ गहरी होती चली गईं।

मैंने बोतल के पानी से अपने गले को तर किया

किसी एक का..हिसाब आज.. कर देता हूँ!

दीपक तुम्हें कहीं और काम ढूंढना होगा

जी अंकल उसे पहली बार इतना उदास देखा।

बाकियों के चेहरे पर भी कोई खास प्रसन्नता नहीं थी।

एक लड़की जो शायद उसी के मोहल्ले से आती है, कुछ कहते कहते रुक गई।

क्या बात है, बेटी? तुम कुछ कह रही थी?

अंकल जी, इसके भाई का भी काम कुछ एक महीने पहले छूट गया है, इसकी मम्मी बीमार रहती है

नज़र दीपक के चेहरे पर गई। आँखों में ज़म्मिदारी के आँसू थे। जो वो अपने हँसमुख चेहरे से छुपा रहा था। मैं कुछ बोलता

कि तभी एक और दूसरी लड़की बोल पड़ी

अंकल! बुरा ना माने तो एक बात बोलूं?

हाँ..हाँ बोलो ना!

किसी को निकालने से अच्छा है, हमारे पैसे कम कर दो..दस हजार की जगह सात हजार कर दो आप

मैंने बाकियों की तरफ देखा

हाँ साहब! हम इतने से ही काम चला लेंगे

बच्चों ने मेरी परेशानी को, आपस में बांटने का सोच, मेरे मन के बोझ को कम जरूर कर दिया था।

पर तुमलोगों को ये कम तो नहीं पड़ेगा न?

नहीं साहब! कोई साथी भूखा रहे..इससे अच्छा है, हमसब अपना निवाला थोड़ा कम कर दें

मेरी आँखों में आंसू छोड़,ये बच्चे अपने काम पर लग गए।।

श्री महावतार बाबाजी

- मनोज चतुर्वेदी, जयपुर

भारत में अनादि काल से अनेक संतो ने जन्म लिया है। जिन्होंने पूरे विश्व की मानवता के लिये पुनीत कार्य करे हैं। इस लेख में भारत के महानतम संत श्री महावतार बाबाजी के जीवन पर कुछ पंक्तियां लिखी जा रही हैं। श्री महावतार बाबाजी से अधिकांश लोग अपरिचित हैं। श्री महावतार बाबाजी जिन्हें बहुत से नामों से जाना जाता है, जैसे शिव बाबा, नागराज बाबाजी, शिवगोरक्ष बाबाजी और श्री बाबाजी. श्री महावतार बाबाजी शताब्दियों से बिना किसी प्रदर्शन या प्रसिद्धि के निरंतर मानवता की सेवा कर रहे हैं।

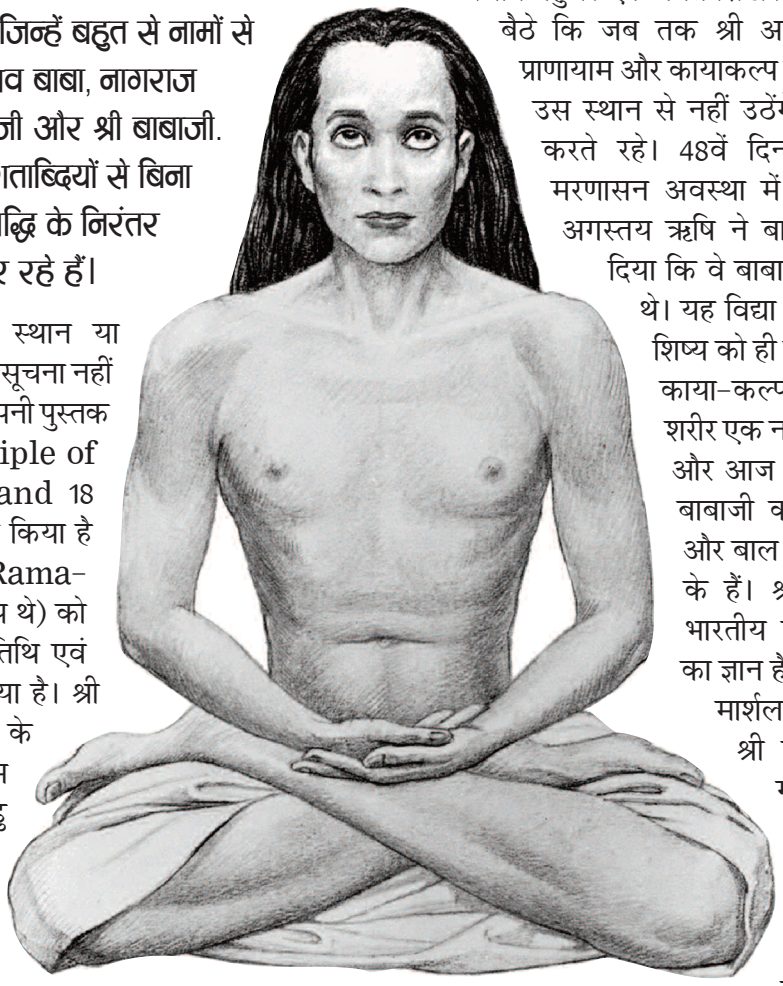

श्री बाबाजी के जन्म स्थान या जन्मतिथि के बारे में निश्चित सूचना नहीं हे.(श्री मार्शल गोविन्दन ने अपनी पुस्तक How I became disciple of Babaji और Babaji and 18 siddhas में यह उल्लेख किया है कि उनके गुरू श्री S.A.A Ramaiah जो श्री बाबाजी के शिष्य थे) को श्री बाबाजी ने अपने जन्मतिथि एवं जन्म स्थान के बारे में बताया है। श्री S.A.A Ramaiah के अनुसार श्री बाबाजी का जन्म 30 नवंबर 203 में तमिलनाडु में पीरांगपेट्टाइ नामक स्थान पर एक नम्बूदरी ब्राहम्ण परिवार में हुआ था। श्री बाबाजी के पिता इसी गाँव में एक शिव मंदिर में पुरोहित थे। श्री बाबाजी के जन्म स्थल पर एक सुन्दर मंदिर का निर्माण हुआ है। श्री बाबाजी बाल्यकाल से विलक्षण बुद्धि और योग्यताओं के स्वामी थे। जीवन के 10-11 साल यहाँ बिता कर 11 वर्ष की आयु में एक साधुओं की टोली के साथ विचरते हुए श्रीलंका के कटिरग्मा नामक स्थान पहुँचें। जहाँ उन्हें उनके गुरू श्री बोगान्थर(बोगर) से भेंट हुई। श्री बाबाजी ने अपने गुरू से शास्त्रों की और योग साधना सीखी। अपने गुरू के आदेश पर श्री बाबाजी तमिलनाडु के तिनवेली जिले के कोंटटैरलम नामक स्थान पहुँचे। एक पर्वत शिखर पर इस प्रण के साथ बैठे कि जब तक श्री अगस्त्तय ऋषि उन्हें प्राणायाम और कायाकल्प की दीक्षा नहीं देंगे। वे उस स्थान से नहीं उठेंगे और गहन प्रार्थना करते रहे। 48वें दिन जब श्री बाबाजी मरणासन अवस्था में पहुँच गयें तब श्री अगस्तय ऋषि ने बाबाजी को आर्शीवाद दिया कि वे बाबाजी की परीक्षा ले रहे थे। यह विद्या किसी अत्यंत उन्नत शिष्य को ही दी जा सकती है। इस काया-कल्प से श्री बाबाजी का शरीर एक नवयुवक के समान हो और आज तक वैसा ही है। श्री बाबाजी का सुगठित शरीर है और बाल लंबे और तांबे के रंग के हैं। श्री बाबाजी को कई भारतीय एवं विदेशी भाषाओं का ज्ञान है।

मार्शल गोविंदन के अनुसार श्री बाबाजी का आश्रम गौरी शंकर पीठम बद्रीनाथ क्षेत्र में है। इस आश्रम को ढूंढ़ पाना अत्यंत कठिन है और प्रवेश तो बिना बाबाजी की आज्ञा के असंभव है। इस आश्रम में बाबाजी अपनी बहन और कुछ शिष्यों के साथ रहते है। श्री महावतार बाबाजी का प्रथम बार उल्लेख श्री परमहंस

योगानंदजी ने अपनी पुस्तक योगी कथामृत (Autobiography of a Yogi) में किया है। परमहंस योगानंदजी के परमगुरू श्री श्यामाचरण लाहिरी महाशयजी, श्री योगानंद जी के गुरू, श्री युक्तेश्वर जी और परमहंस योगानंदजी ने श्री बाबाजी के साथ भेंट का बड़ा रोचक वर्णन किया है। श्री बाबाजी का चित्र जो सब जगह उपलब्ध है। वह श्री परमहंस योगानंदजी ने श्री बाबाजी से अपनी भेंट के पश्चात स्मृति के आधार पर बनवाया था।

श्री महावतार बाबाजी की शिक्षा–दीक्षा भगवान श्री कृष्ण ने राजयोग (क्रियायोग) की दीक्षा सूर्य के देवता श्री विवस्वत को दी थी। राजयोग का वर्णन गीता मे कुछ स्थानों पर आता है। श्री विवस्वत से यह विद्या ईश्वाकु वंश में कई पीढ़ीयों तक चली। उस समय गुरू अपने शिष्यों को इसको सिखाते थे। बाद में गुरू–शिष्य परंपरा के लुप्त हो जाने से यह विद्या भी लुप्त हो गयी। सन् 1861 में श्री महावतार बाबाजी ने श्री लाहिरी महाशय को इसकी दीक्षा दी और इसको क्रिया–योग का नाम दिया। श्री लाहरी महाशय के माध्यम से यह ज्ञान विश्व के बहुत सारे देशों में फैल गया।

श्री परमहंस योगानंदजी ने क्रिया–योग को सर्वोत्तम पद्धति बताया है। उन्होंने लिखा है ईश्वर प्राप्ति के अनेक रास्ते हैं, किंतु क्रिया–योग सबसे अधिक वैज्ञानिक और तेज मार्ग है। यह ज्ञान सबके लिए उपलब्ध है। कोई भी पूर्ण सर्मपण एवं प्रयास के द्वारा इसी जीवन में ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। श्री बाबाजी ने क्रिया–योग की दीक्षा श्री आदि शंकराचार्य, श्री कबीर दास जी, श्री लाहिरी महाशय एवं अन्य शिष्यों को दी है। श्री लाहिरी महाशय ने इसे शिरडी के सांई बाबा को सिखाया था। श्री बाबाजी एवं सभी संत चमत्कारों के प्रदर्शन में विश्वास नहीं करते। सभी संतो को प्रसिद्धि या वैभव नहीं चाहिये। यदि कोई संत चमत्कार करता भी है तो वह ईश्वर की इच्छानुसार होता है। श्री बाबाजी ईश्वर की इच्छा से सदैव जीवित रहेंगे और मानवता के आध्यात्मिक उत्थान के लिए कार्यरत रहेंगे। श्री महावतार बाबाजी ने स्वयं कहा है कि जब कोई मुझे अपनी आत्मा की गहराई से पुकारेगा तो वह जानेगा कि मैं उसके साथ हूं। सभी पाठको पर श्री महावतार बाबाजी की कृपा बनी रहे. श्री महावतार बाबाजी के चरणों में शत शत प्रणाम।

जीवन का उद्देश्य एवं सद्गुरू

हम सभी लोग इस पृथ्वी पर एक उद्देश्य को पूरा करने के लिये आये हैं। यदि हम इस जीवन में उस उद्देश्य को पूरा कर पाये या हमने उद्देश्य की प्राप्ति के मार्ग पर प्रगति कर पाये तो जीवन सफल है, अन्यथा व्यर्थ। हम सभी मानवों का एक ही उद्देश्य है– ईश्वर की प्राप्ति या अपने शरीर में उपस्थित आत्मा के स्वरूप को पहचानना। सभी संतो ने लिखा है या कहा है मनुष्य की आत्मा का ईश्वर या परमात्मा में विलीन होना ही मुक्ति है, मोक्ष है। इस मुक्ति या मोक्ष के बाद आत्मा, जीवन मृत्यु के चक्र से मुक्त हो जाती है।

ईश्वर ने प्रत्येक मनुष्य को अपनी छवि में बनाया है और हमें वह सब शक्तियां दी हैं जो ईश्वर के पास हैं। हमें ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए अपने लिए अपने परिवार के लिए और समाज के लिए सर्वोत्तम सात्विक मनोकामनाएं पूर्ण करनी चाहिए, लेकिन सदैव याद रखना चाहिए कि हम किस उद्देश्य के लिए आये हैं।

भगवान श्री कृष्ण ने गीता मे लिखा है कि हे अर्जुन 1000 लोगों में 1 मनुष्य मेरे बारे में जानना चाहता है और ऐसे 1000 लोगों में जो मेरे बारे में जानना चाहते हैं सिर्फ 1 मनुष्य मेरे वास्तविक स्वरूप को जान पाता है. 999 मनुष्य अपने जीवन के उद्देश्य को जानते ही नहीं या इस संसार को सत्य मान लेते हैं और अपनी सांसारिक कामनाएं पूरा करने में पूरा जीवन बिता देते हैं। ऋषि मुनियों ने मनुष्य के जीवन का कितना अनुपम विभाजन किया था। ब्रह्माचार्य (शिक्षा के लिए), गृहस्थ (परिवार के लिए), वानप्रस्थ (सांसारिक इच्छाओं के त्याग के लिए) और सन्यास (ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास)।

एक बार किसी ने श्री आदिशंकराचार्य से पूछा– सबसे भाग्यशाली मनुष्य कौन है?

आदिशंकराचार्य ने कहा, वह मनुष्य जिसे 3 चीजें मिली हों

1. मनुष्य शरीर2. ईश्वर को जानने की इच्छा 3. गुरू। गुरू के बिन ईश्वर प्राप्ति लगभग असंभव है। प्र. गुरू कौन है?

उ. वह संत जिसने अपने जीवन में ईश्वर को प्राप्त कर लिया हो, वह शिष्य को ईश्वर तक पहुँचा सकते हैं। वे ईश्वर तक पहुँचने के मार्ग से पूर्णतः परिचित होते हैं. हरेक संत गुरू नहीं हो सकता। गुरू ईश्वर द्वारा ही चुने जाते हैं।

प्र. गुरू की प्राप्ति कैसे हो?

उ. संतो की जीवनी पढ़े, उनकी शिक्षाएं पढ़े और ईश्वर से प्रार्थना करें कि उन्हें भी गुरू मिलें. ईश्वर और अपनी प्रार्थना पर विश्वास रखें। विश्वास करें ईश्वर आपसे ज्यादा , आपसे मिलने के लिए लालायित हैं. आपको अवश्य गुरू मिलेंगे। गुरू एक चेतना है जो ईश्वर द्वारा चुने गये हैं और ईश्वर प्राप्त हैं। अतः उनकी चेतना सर्वव्यापी है। गुरू शरीर में रहे अथवा नहीं, इससे कोई फर्क नही पड़ता। गुरू अपने शिष्य की आध्यात्मिक उन्नति देखना चाहते हैं. ये गुरू–शिष्य का सबंध जन्म–जन्मांतर चलता है जब तक शिष्य अपने ईश्वर की प्राप्ति न कर ले। गुरू–शिष्य के बीच सिर्फ एक सबंध होता है– दोनो तरफ से निस्वार्थ प्रेम। ईश्वर से प्रार्थना है कि सभी पाठकों को अपने–अपने गुरू इसी जीवन में मिलें।

श्री राम जन्मभूमि-अयोध्या

- कैलाश चतुर्वेदी, कासगंज

'' प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोक नमस्कृतम।
कौशल्या जनयद रामं दिव्यल क्षण संयुतम।।

जो परमेश्वर, जगत के स्वामी, जिने सभी पूजते हैं, नमस्कार करते हैं, उन परमात्मा विष्णु को कौशल्या ने राम के रूप में जन्म दिया, जो सभी दिव्य लक्षणों से युक्त थे। राम हमारी संस्कृति के आधार और भारत की मर्यादा है। राम मंदिर हमारी राष्ट्रीय भावना व देश के सामूहिक संकल्प का प्रतीक हैं। राम सब के है- सब में हैं। उनकी यही सर्वव्यापकता भारत की विविधता में एकता का जीवन चरित्र है। बाल्मीक रामायण के राम प्राचीन भारत के पथ प्रदर्शक और वही राम मध्य युग में तुलसी, कबीर व नानक के माध्यम से देश को संदेश देते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन में बापू के भजनों में सत्याग्रह व अहिंसा की शक्ति बन कर मौजूद थे। भारत की अनेकता में एकता के आधार है राम। तमिल में कंव रामायाण तो तेलगु मे रंगनाथ, कन्नड़ में कुमुदेदु, मलयालम में रामचरितम और बांगला में कृतिवास रामायण है। गुरू गोविंद सिंह जी ने तो खुद गोविंद रामायण लिखी है। विश्व के कई देशों इंडोनेशिया, कंबोडिया, लाओस, मलेशिया, थाईलैंड, श्री लंका व नेपाल आदि में राम रचे बसे है। श्री राम समस्त धर्मो के पारंगत विद्वान, बृहस्पति के समान बुद्विमान, सभी विद्याओं में प्रवीण और जितेद्रिंय रहै-

'' पारगं सर्वधर्माणां बृहस्पति समं मतौ।
सर्वानुरक्त प्रकृतिं सर्व विद्या विषारदम।।''

भारत की आस्था, आत्मा, आदर्शो, दिव्यता और दर्शन में राम हैं।

'' राम काजु कीन्हें बिनु मोहिं कहां विश्राम''

अतीत की नींव पर आगत का आगाज- अयोध्या और सरयु तो युगों से तीर्थ हैं हीं, 5 अगस्त 2020 का भूमिपूजन सत्य, आस्था और बलिदान की गौरवमयी भेट व सांस्कृतिक गौरव की पुनर्स्थापना का स्वर्णिम क्षण है। यह दिन युगों युगों तक देश की कीर्ति की पताका को फहराता रहेगा। भारत में सनातन धर्म की ऊँचाई और गहराई अनंत है, अयोध्या इसकी राजधानी और सरयु इसकी मोक्षदायनी माँ है। मंदिर तोड़े जाने के जिस संताप का सामना अयोध्या नगरी पांच सदी तक करती रही उसका परिमार्जन है यह भूमिपूजन। अनेक साधू-संतों, महापुरूषों के बलिदानों एवं आन्दोलनों के कारण इस गौरव के क्षणों का अहसास हुआ। कहते हैं कि धर्म की रक्षा दो तरह से होती है, शास्त्र से और शस्त्र से पर यह दौर बताता है कि धर्म की रक्षा उसके अनुयायियों की आस्था से भी होती है। रामभक्तों की आस्था अडिग रही, भूमिपूजन इसी आस्था का प्रतिफल है और भगवान राम का करीब पांच सौ साल का वनवास खत्म हो गया।

'' राम राज बैठे त्रेलोका,
हर्षित भए गए सब शोका।
बयरू न कर काहू सन कोई, राम प्रताप विषमता खोई।।''

अयोध्या देश के गौरव की भूमि है, रामलला का यह मंदिर हम भारतवासियों की अध्यात्मिक संतुष्टि का पूरक एवं राष्ट्र को यश, वैभव और उन्नति प्रदान कर भारतीय संस्कृति व संस्कार को दशों दिशाओं में बढ़ायेगा। रामलला का यह मंदिर दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से रक्षा कर भारत के स्वाभिमान की स्थापना का प्रतीक होगा। रामलला की प्राण- प्रतिष्ठा भारत की सांस्कृतिक अन्तरात्मा की समरस अभिव्यक्ति का प्रतिमान सिद्व होगी।

'' लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम।
कारूण्यंरूपं करूणाकरंतं श्री रामचंद्रं शरणं प्रपद्ये।''

मैं सम्पूर्ण लोको में सुदंर तथा रणक्रीणा में धीर, कमलनेत्र, रघुवंश नायक, करूणा की मूर्ति और करूणा के भंडार रूपी श्री राम की शरण में हूँ।

!! जय श्री राम !!

संवेदना

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी, भोपाल

बहुत दिनों से कानपुर जाने का प्रोग्राम बन रहा था। जाने से पहले कुछ ना कुछ आवश्यक कार्य आ जाता और कानपुर ना जा पाती। इस बार तो बड़ी भाभी ने नाराज होकर बोल दिया था अब आप से कानपुर आने की कहेंगे नहीं।

हम दोनों पति पत्नी ने मशविरा किया और कानपुर जाने की रिजर्वेशन करा लिया। कानपुर में कड़ाके की सर्दी पड़ रही थी। रिजर्वेशन भी ऐसी ट्रेन में मिला जो सुबह 4:00 बजे कानपुर फ्हुँचाती थी। सोचा सुबह 4:00 बजे बहुत अँधेरा होगा। स्टेशन पर बैठ जाएँगे। उजाला होने के बाद घर चले जाएगें। गाड़ी राइट टाइम कानपुर पहुँच गई। 6 नंबर प्लेटफार्म था। हल्की हल्की रोशनी हो रही थी। जितनी सवारी उतरनी थी। उतर गई कोई खास चहल पहल न थी। उतरते ही लगा जैसे कहीं हिल स्टेशन पर आ गए। ठंडी हवा तीर के समान लग रही थी। कोई कुली नहीं था। सामान खींचकर एक नंबर प्लेटफार्म पर आ गए। बैठे और सोचा चाय पी ले। चाय पी ही रहे थे तभी घर से फोन आ गया। हम लोग जाग गए हैं। रिक्शा करके आ जाओ बिल्कुल पास ही है घर। बाहर निकल कर त्रिवेणी नगर के लिए रिक्शा किया और अपनी मंजिल की ओर चल पड़े। रास्ते भर रिक्शावाला बोलता आया। हम लोगों को भी सहारा हुआ। अँधेरा था। बात करने से ध्यान बँट रहा था। बोली का लहजा पहचाना सा लगा। पूछा कहाँ के रहने बाले हो भिंड के। पति बोले अच्छा तभी भदावरी बोली लग रही है। हम लोग भी उधर के हैं। मंजिल आ गई त्रिवेणी नगर का गेट आ गया। पैसे दिए साहब खुले नहीं है अभी अभी तो बोहनी हुई है।'

पति बोले कहीं से खुले करा लो'

हाँ साहब सामने के ठेले से करा के लाता हूँ।

और वह सड़क पर चला गया। हम लोग खड़े थे 10 मिनट हो गए लौट के नहीं आया।

मै देखता हूँ यह भी चले गए।

मैं दूर से देख रही थी। रिक्शावाला चिल्लर गिन रहा था। एक कोई महिला खड़ी थी वह लोगों को कुछ देती हुई दिख रही थी। बड़ी देर लगा दी, मैडम चिल्लर थी गिनने में देर लगी।

वह काहे का ठेला है, मैडम चाय का है मेरी घरवाली लगाती है।

सुबह इतनी जल्दी मैडम सर्दी में बिक्री का यही समय है।

सब रिक्शे वाले हैं गर्म होने के लिए चाय पीते हैं।

पत्नी अकेली खड़ी रहती है। डर नहीं लगता। मैडम समय डर भगा देता है।

हम लोग उतर गए और उससे कहा सामने चाय पीने आएंगे। मैं तो कह कर भूल गई और इतने दिन बाद घर में सबसे मिली थी। कुछ याद नहीं रहा।

2 दिन बाद यह बोले।

सुबह-सुबह घूम कर आता हूँ।

घूम कर आने में देर लगी। मैंने कहा कहां चले गए थे बहुत देर हो गई। कहानी लंबी है इन्होंने ने बताया वह चाय वाली लड़की, बड़े गांव की निकली रामसनेही पिता का नाम बता ही थी।

कहानी सुनकर थोड़ी देर में भी आश्चर्यचकित रह गई।

यह बोले राम सनेही की पत्नी मर गई थी यह बता रही थी।और रामसनेही बिना बताए कहीं चले गए। ताई के पास रहती थी। ताई को लगा शादी करनी पड़ेगी। क्यों खर्च करें और उन्होंने नानी के यहां भेज दिया अकेले ट्रेन में बैठा दिया। किसी तरह वह घर पहुंच गई। नानी ने रखा मगर नानी पर खुद ही खाने को नहीं था। एक दिन उन्होंने ट्रेन में बैठा दिया जाओ ताई के पास।

जिस ट्रेन में बैठी थी वह कानपुर पर खत्म हो जाती थी। रात के 2:00 बज रहे थे। स्टेशन पर उतरी अकेली लड़की देख कर चार लफंगे पीछे लग गए। जिस रिक्शे, में हम लोग आए थे। वह रिक्शावाला स्टेशन पर सवारी ढूंढ रहा था। उसने देखा एक अकेली लड़की जिसकी उम्र 18 उन्नीस साल होगी। लड़के परेशान कर रहे हैं। लड़की चेहरे से बहुत घबराई दिख रही थी। रिक्शेवाले के मन में दया आई और उसने लड़कों को डांट कर भगाया और लड़की से पूछा का नाम है तुमाओ

कमला हमाओ नाम

कमला ने रोते रोते सारी बात बताई। रिक्शावाला रामलाल बोला कही गलत हाथों में ना चली जाए। यह सोचो मैंने। साब समझ में नहीं आया क्या करें। पता पूछो तो इनने बडे गॉव बताओ। घर थाने से खबर कराई मगर कोई लेने वालो नहीं आओ। पुलिस वालों ने कहा अनाथ आश्रम भेज दो। मगर

कमला तैयार नहीं थी।

साबमैने इज्जत सों राखो ।

मगर दुनियाँ समझने को तैयार नहीं थी।पूछ.लो जासे मैंने कैसे रारवो। जाके कहने के बाद ब्याह कर लिया कचहरी जाके।

पति बोले भाभी को सहारा चाहिए जी मोढ़ी ठीक है। बड़े गॉव की है। मैं बुला आया हूँ। इनकी जिन्दगी बना दे।

कहा है तुम त्रिवेणी नगर आ जाओ भाभी से बात करा देंगे। सर्वेंट क्वार्टर में रहना और घर का सारा काम करना। चाय का ठेला पति लगा लेगा।

यह दूसरे दिन फिर गए बुलाने। मालूम पड़ा अतिक्रमण वाले आए थे। ठेला उठा ले गए झुग्गी भी तोड़ दी। लोगों से पूछा क्या मालूम कहां गए सब ने कहा।

मैं भी बात भूल गई काम में लग गई। 3 साल बाद अचानक फोन आया चाची कमला बोल रही हूं।

एकदम दिमाग में नहीं आया कौन कमला उसने बताया कानपुर में मिली थी चाची आप मैं वही कमला हूं। मुझे याद आ गया अच्छा तुम कहां चली गई थी। तुम्हें बहुत ढूंढा तुम नहीं मिली। ठीक हो पति ठीक है एक सांस में सब पूछ लिया।' चाची गंगा पार चले गए थे वही ठेला लगाने लगे हैं। अब आप आओ तब मिलेंगे'।

आप को दओ कार्ड आज मिल गओ। तो बात कर लयी। मैंने उसे घर का पता दिया और कहा भाभी से जाकर मिल लो वहीं पर इज्जत से रहो। मैं जब दोबारा 2 साल बाद गई तो देखा वह घर का सारा काम सुचारू रूप से करती है। उसका पति अब ऑटो रिक्शा चलाता है। एक 1 साल का लड़का था।

मैंने सोचा बड़ी स्वार्थी दुनिया है। लोगों की संवेदनाएं मर गई है। यदि रामलाल रिक्शावाला सहायता नहीं करता या उसकी संवेदना जागृत नहीं होती तो शायद कमला कहॉ होती मैं सोच नहीं पा रही थी।

कुछ के पास पैसा नहीं है। पास कुछ हो ना हो लेकिन दिल में संवेदनाएं अभी भी हैं। कुछ ना हो मगर संवेदनाएं अवश्य हो।

गांव जाकर चर्चा की मगर अपनी सफाई में उन लोगों ने कह दिया। अपने आप चली गई हम क्यों नहीं रखते। हमारे घर की इज्जत थी। मगर अब ना बुलायेगे।नाक कटवा दी मोढ़ी ने। क्योंकि उनकी करनी गांव जान गया था। कमला के समाचार लगातार मिलते रहते हैं।

विज्ञापन की दरें

चतुर्वेदी चंद्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु नयी दरें (चतुर्वेदी बांधव हेतु) निर्धारित की हैं। ये दरें निम्नानुसार हैं -

क्र.	पृष्ठ	1 अंक	3 अंक	6 अंक	12 अंक
1.	अंतिम कवर-रंगीन-व्यवसायिक	12,000/-	35,000/-	70,000/-	1,25,000/-
2.	भीतरी कवर-रंगीन-व्यवसायिक	10,000/-	30,000/-	50,000/-	1,00,000/-
3.	पूरा पृष्ठ-रंगीन-व्यवसायिक	8,000/-	24,000/	45,000/-	85,000/-
4.	पूरा पृष्ठ-श्वेत-श्याम-व्यवसायिक	6,000/-	18,000/-	30,000/-	60,000/-
5.	आधा पृष्ठ-श्वेत-श्याम-व्यवसायिक	4,000/-	12,000/-	20,000/-	40,000/-
6.	चौड़ाई पृष्ठ-श्वेत-श्याम	2,500/-	7,500/-	12,500/-	25,000/-
7.	शुभकामना संदेश-श्वेत-श्याम-1/6 बॉक्स	1500/-	4500/-	8000/-	12,000/-
8.	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ-श्वेत-श्याम	3,000/-			
9.	श्रद्धांजलि-आधा पृष्ठ-श्वेत-श्याम	1500/-			
10.	श्रद्धांजलि-पूर्ण पृष्ठ-रंगीन	6,000/-			
11.	श्रद्धांजलि-द्वितीय/तृतीय कवर-रंगीन पृष्ठ	8,000/-			
12.	बधाई/शुभकामना पूर्ण पृष्ठ रंगीन	6,000/-			
13.	श्वेत श्याम 1/4 पेज	1,000/-			

सचिव,श्री माथुर चतुर्वेदी महासभा

पुण्य स्मृति दिवस (3 सितम्बर) पर विशेष

साहित्य सम्मेलन के प्रथम सभापति पं0 जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी

- डा. अनिल सुलभ

खड़ी बोली हिन्दी की प्रथम पीढ़ी के महान कवियों और भाषाविदों में अग्रपांक्तेय साहित्यकार और 'हास्य रसावतार' के रूप में सुविख्यात मनीषी विद्वान पं जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम सत्र-सभापति थे। 19 अक्टूबर 1919 को स्थापित किए गए साहित्य सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन 8-9 नवम्बर 1919 को सोनपुर मेले में आयोजित हुआ था। जिसका सभापति चतुर्वेदी जी चुने गए थे। तब सम्मेलन अध्यक्ष को सभापति ही कहा जाता था। पंडित जी अपनी पीढ़ी में अखंडित भारत के श्रेष्ठ साहित्यकारों में तो गिने ही जाते थे, अत्यंत लालित्यपूर्ण हास्य-रस और व्यंग्य के श्रेष्ठतम साहित्यकार माने जाते थे। काव्य में छंद के प्रति विशेष आग्रह रखने वाले चतुर्वेदी जी गद्य साहित्य में भी रोचकता और लालित्य के पक्षधर और हास्य-व्यंग्य में फूहड़ता तथा व्यक्तिगत आक्षेप के प्रबल विरोधी थे। उनकी विद्वता और भाषा-सौंदर्य अनुपम था। व्याख्यान शैली और संपूर्ण व्यक्तित्व मनोहारी था, जिसने उन्हें साहित्यिक-मंचों का लोकप्रिय व्यक्तित्व बना दिया था। मंचों पर उनके प्रवेश पर ही श्रोताओं की तालियाँ बजने लगती थी। निर्मल और सात्विक हास्य का पूट लिए उनका व्याख्यान अत्यंत विद्वता पूर्ण, विषय पर केंद्रित तथा भाषा-परिष्कार का उदाहरण होता था। उन्हें अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का भी सभापति होने का गौरव प्राप्त हुआ था। वे 1922 में लाहौर में संपन्न हुए सम्मेलन के 12 वे अधिवेशन के सभापति चुने गए थे। वे कोलकाता से प्रकाशित हिन्दी पत्र 'भारत मित्र' के संपादक तथा दर्जन भर से अधिक मूल्यवान ग्रंथों के रचयिता थे। 'भारत-मित्र' में अनेक वर्षों तक उनका स्तम्भ 'हास्य-विनोद' का प्रकाशन होता रहा था।

पंडित चतुर्वेदी का जन्म 10 अक्टूबर, 1875 को बिहार के भागलपुर जिले (अब जमुई) के मलयपुर कस्बे में एक निम्न माध्यम वर्गीय विप्र-कुल में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा जमुई नार्मल स्कूल एवं मुंगेर ज़िला स्कूल में हुई। 1898 में उन्होंने ईश्वर चंद्र विद्या सागर द्वारा स्थापित 'मेट्रो पोलिटन कौलेज, कोलकाता में एफ ए में नामांकन कराया, किंतु उत्तीर्ण नही हो सके। तथापि 1904 में उनकी कलकत्ता विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग में 'थर्ड पण्डित' के रूप में नियुक्ति हो गई। एक वर्ष के पश्चात उन्होंने स्थानीय व्यापारी मिर्जामल के साथ मिलकर 'मिर्जामल - जगन्नाथ ऐंड कंपनी आरंभ की और कुल की मर्यादाओं के विपरीत चमड़ा उद्योग में लिप्त हुए।

उन्होंने जीविका का साधन करते हुए, साहित्य की साधना भी आरंभ की। वहीं बाबूलाल मुकुंद गुप्त के साथ मिलकर 'भारत मित्र' का प्रकाशन आरंभ किया और संपादक का दायित्व स्वीकार कर हिन्दी भाषा के उन्नयन में प्रवृत्त हुए। यहाँ रहते हुए उन्हें बंगला भाषा का भी वृहद ज्ञान हुआ और वे अनुवाद साहित्य में इसका लाभ उठाने लगे। उन्होंने अनेक बाँगला साहित्य का हिन्दी अनुवाद किया।

वर्ष 1925 में वे कलकता से वापस मलयपुर लौट आए। 1927 में जिले के खैरा स्टेट के प्रबंधक नियुक्त हुए। अपने सदव्यवहार और विद्वता से वे गिद्धौर महाराज से भी आत्मीय संबंध बनाने में सफल रहे। उन्होंने खैरा स्टेट और गिद्धौर स्टेट के परिसीमन का कार्य भी सौहार्दपूर्ण ढंग से कराने में सफलता अर्जित की। गिद्धौर महाराज काव्य-रसिक और और विद्वानों का सम्मान करनेवाले सारस्वत व्यक्तित्व थे। कवियों का उनके दरबार में बड़ा स्थान था। इस कारण से भी, महाराज उनका बड़ा ही समादर करते थे। वर्ष 1933 आते-आते पंडित जी अस्वस्थ रहने लगे और उन्होंने खैरा स्टेट के प्रबंधक के दायित्व से मुक्ति लेकर मलयपुर वापस हो गए।

पंडित जी के काव्य-साहित्य पर स्वाभाविक रूप से ब्रजभाषा का गहरा प्रभाव था। यह वह युग था, जब छंद लिखने के लिए ब्रजभाषा को काव्य-संसार का अविभाज्य अंग माना जाता था। वे इस बात के पक्षधर थे कि हिन्दी काव्य में एक झटके से 'ब्रजभाषा' से मुँह मोड़ लेना अनुचित होगा। खड़ी बोली के विकास में जिस प्रकार देश की सभी भाषाओं का सहयोग अपेक्षित है, उसी तरह काव्य में ब्रजभाषा के महत्व को किनारे नही किया जा सकता। यद्यपि धीरे-धीरे छंदों में खड़ी बोली के प्रयोग के लिए उन्होंने स्वयं भी उद्योग किया और इसमें सिद्धि भी प्राप्त की। उनके 'हास्य-विनोद' सर्वथा और सर्वदा मन का रंजन तथा सत्य के प्रति अनुप्राणित करने वाले हुआ करते थे। उनके व्यंग्य में मीठी छुरी थी। उससे व्यंग्य के लक्ष्य बने लोग भी कटुता से ग्रस्त नहीं होते थे, अपितु उसका आनंद लेते थे। उनकी व्यंग्य-छुरी कब लक्ष्य के दुर्गुणो को काटकर उसे दोष-मुक्त कर जाती थी, वह किसी को

पता भी नही चलता था।

उनकी लिखी पुस्तकों की भाषा शैली में स्थान-स्थान पर हास्यरस-बिंदु सहृदय पाठकों को आप्यायित करते चलते हैं । उनके उपन्यास , निबंध, नाटक आदि भी काव्य का रस प्रदान करते हैं। 'वसंत-मालती', 'संसार-चक्र', 'तूफ़ान', 'विचित्र विचरण' ('गुलिवर्स ट्रैवेल्स' का हिन्दी रूपांतर), 'गद्यमाला', 'मधुर मिलन', 'भारत की वर्तमान दशा', 'स्वदेशी आंदोलन' आदि ग्रंथों से हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने वाले चतुर्वेदी जी जीवन में आडंबर के विरोधी और प्रगतिवादी थे। जीवन-यापन के लिए उन्हें पारंपरिक वृति को तोड़ने में भी परहेज़ नहीं था। इसका ज्वलंत उदाहरण उन्होंने स्वयं ही दिया। विप्र-कुल का होने पर भी उन्होंने चमड़े का व्यवसाय किया। वे मानते थे कि जीवन-यापन के लिए कोई भी कर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। व्यक्ति के विचार छोटे या बड़े होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपना कर्तव्य निष्ठा पूर्वक करना चाहिए।

अपनी पीढ़ी के साहित्यकारों में भी वे लोकप्रिय और आत्मीय बने रहे। हिन्दी काव्य के अनमोल रत्न अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔंध' उनके अनन्य मित्र और शुभेच्छु थे। देशरत्न डा राजेंद्र प्रसाद, आचार्य शिवपूजन सहाय, श्याम सुंदर दास, वियोगी हरि, बनारसी दास चतुर्वेदी, साहित्य वाचस्पति श्रीनारायण चतुर्वेदी, केदारनाथ मिश्र 'प्रभात' आदि मनीषी साहित्यकार और विद्वान उनके प्रशंसक थे। हिन्दी के महान विद्वान और आचार्य पं सकल नारायण शर्मा उनके अत्यंत घनिष्ठ मित्र थे। कलकत्ते में वे अनेक वर्षों तक एक मकान में साथ में रहे। दोनों का अधिकांश समय साहित्यिक विमर्श और विशेषकर भाषा-परिष्कार के विषयों पर चर्चा में व्यतीत होते थे। पंडित जी अहर्निश हिन्दी भाषा के संवर्धन में निमग्न रहते थे। हिन्दी के प्रति उनका अनुराग ऐसा था कि, मिलने वाले प्रत्येक हिन्दी प्रेमी से वे यह अवश्य पूछा करते थे कि आपने अब तक हिन्दी की कौन-कौन सी पुस्तकें पढ़ीं? प्रत्येक वर्ष कितनी नई पुस्तकें ख़रीदते हैं? पत्रिकाएँ कौन-कनु सी मँगाते हैं? पत्र हिन्दी में लिखते हैं? लिफ़ाफे पर पता भी क्या हिन्दी में लिखते हैं?"

प्रत्येक मिलने वाला व्यक्ति उनसे वार्तालाप करते हुए सावधान रहता था। भाषा की कोई भूल वे नज़र-अन्दाज़ नही कर सकते थे। व्याकरण और उच्चारण का कोई भी दोष हुआ कि नहीं, पंडित जी तत्काल टोकते और उसका परिसंस्कार करते थे। भाषा के प्रति वे इतने सजग थे कि वे सूक्ष्म से सूक्ष्म भूल को भी पकड़ लेते थे। एक समाचार पत्र में एक वाक्य छपा था- "यह समाचार समाचारपत्रों में प्रकाशित हुआ था । चतुर्वेदी जी का संशोधन था कि इसे इस प्रकार लिखा जाना चाहिए- समाचारपत्रों में यह समाचार प्रकाशित हुआ था। चतुर्वेदी जी पर अपने एक आलेख में आचार्य शिवपूजन सहाय ने उनकी भाषा-चेतना पर सविस्तार लिखा है। सहाय जी कहते हैं कि,व्याकरण विषयक अशुद्धियों पर तो वे ध्यान देते ही थे, वाक्यों के भ्रमात्मक रूप पर भी निगाह रखते थे। उनके विचार से 'हिचकिचाहट' शब्द के बदले 'हिचक'लिखना ही उपयुक्त है। अपने युग में चतुर्वेदी जी हिन्दी भाषा के मर्मज्ञ विद्वान माने जाते रहे। भाषा विषयक उनकी विशेषज्ञता ने उस समय के कितने ही धुरन्धर लेखकों को परेशानी में डालकर उनका लोहा मानने के लिए वाध्य किया था। उन दिनों के भाषा संबंधी विवादों में वे बड़ी निर्भिकता से अपने पक्ष पर दृढ़ रहते थे। शुद्धाशुद्ध भाषा की बारिकियाँ परखने में उनकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। इसी परख में उनके जीवन का प्रत्येक क्षण व्यतीत होता था। चाहे वे बाज़ार में रहें या ट्रेन में सफ़र करते हों, हर घड़ी, उठते-बैठते, चलते-फिरते, बोलते-बतियाते, वे व्याकरण-समर्थित शुद्ध भाषा पर ध्यान रखने में सजग रहते थे। बातचीत के प्रसंग में भी उनके सामने कोई अशुद्ध भाषा बोलता था तो वे सुपर्चित व्यक्तियों को तुरंत टोककर सावधान कर देते थे। किंतु दूसरों को भी किसी अन्य व्याज से ही सही, पर शुद्ध रूप का ज्ञान करा देते थे। पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते समय दुष्प्रयोगों पर निशान करते चलते थे। नाटक देखते समय अभिनेताओं के कथोपकथन पर ही उनका विशेष ध्यान रहता था। सभा-सम्मेलनों के भाषणों में भी उनके कान चौकन्ने रहते थे।

हरिऔध जी उनके हिन्दी प्रेम पर मुग्ध रहा करते थे। एक स्थान पर उन्होंने लिखा कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का शायद ही कोई वार्षिक उत्सव होगा, जिसमें वे उपस्थित न रहे हों। वे बहुत बड़ा व्यय स्वीकार करके बहुत दूर के स्थानों में पहुँचते थे और अपने वाक चातुर्य से उसमें जीवन डाल देते थे। वे मूर्तिमान 'उत्फ़ुल्लता' थे और सहृदयता उनमे कूट-कूट कर भरी थी। वे रोतों को भी हँसाते थे और निर्जीव जीवन में भी संजीवन का संचार करते थे। उनका व्यंग्य कितनों को सत्पथ पर लाता था और उनकी हँसी अपने विपक्षियों को भी अपनापन का मंत्र पढ़ाती थी मेरे वे बंधु ही नहीं आत्मीय से बढ़कर थे। ऐसा ज़िंदादिल मित्र मुझको अपने जीवन में दूसरा नहीं मिला।

खैरा स्टेट में जो उनका स्वास्थ्य प्रभावित हुआ। वह फिर नही सुधरा। साहित्य और लेखन जीवन का पर्याय बन चुका था। वह छूटता न था। 3 सितम्बर 1939 को प्राण लेकर ही वह छूटा। इस प्रकार हिन्दी के एक महानतम सेवी की अखंडित साधना से हिन्दी संसार वंचित हो गया। 64 वर्ष की अपनी आयु में पंडित जी ने जो कृति छोड़ी वह हिन्दी साहित्य की धरोहर और अमर कीर्ति-शेष है। उनके पुण्य स्मरण दिवस पर श्रद्धा-तर्पण देते हुए अपने दोनों नेत्रों को तरल पाता हूँ।

किंतु इस एक बात का परितोष अवश्य है कि उनके पौत्र श्री विनय वल्लभ चतुर्वेदी उनकी स्मृति को जीवंत बनाए रखने की चेष्टा कर रहे हैं। वहीं उनके बुआ के प्रपौत्र पं सुरेश नीरव उनकी साहित्यिक चेतना को आगे बढ़ा रहे हैं। इस प्रकार उनका साहित्यिक संस्कार आने वाली पीढ़ियों में जीवित है।

How to summon you- respected Papu,Papuji,'George', or my dear father.The thought of penning your obituary only, moistens my eyes. Today I pay homage to you with this nodescript offering.

You were born in a sports family of Meerut which was known for its hockey exploits in the Indian sports stage . Great grand father Shradhyey Raibahadur Radhelaalji was eminent civil lawyer in Meerut city in pre independence India.The family originated from Holipura and was known by the name of Ghadhi Parivaar.Father Amarnath ji Chaturvedi was a eminent professor of history in Meerut University as well as a known hockey player of his time,a great organizer who kept hockey alive in UP state for a long time .He hosted the hockey legends like Dhyan Chand ,Roop Singh,Balbir Singh Sr ,KD Singh Babu and Habul Mukherjee (only coach of Indian hockey to win three consecutive gold medals-cinematised by Akshay kumar in movie "GOLD").Your brothers Prem Prakash, Hem Prakash ,Anand Prakash also played for UP state and were players of eminenence.

Pramod ji was born in Meerut in 1939 and sixth child of family. You had a very tough childhood.Being in a sports family he developed into a hockey player of stature. A never say die attitude kept you going against all odds and helped you prove yourself against trying circumstances time and again .In the midst of your turmoiled childhood and youth ,you did your BA in History and MA in economics from Meerut University. During your MA study days you used to work in CDA Meerut to support your family and carry on your studies from Meerut University in the night. You represented the Meerut university consecutively for three years followed by selection in All India Combined University hockey team and played with likes of Olympians Inam

ur Rehman,Harbinder Singh , Inder Singh , Jhaman lal Sharma , Joginder Singh and was coached by the great KD Singh Babu during those days.After completing university you went on to play proffessional hockey for East bengal Club in 1962 in Kolkata and rubbed shoulders with like of Olympians Inam ur Rehman, Baalu and Joginder Singh.You lifted the Calcutta Hockey League championship title from 1962 to 64. You joined Customs and played with likes of Olympians Leslie Claudius and Gurbux Singh. You led the teams to win Beighton Cup- the Blue Riband of Indian hockey two times , each with East Bengal and then with Calcutta Customs. You won the Bengal hockey league championship thrice with East Bengal ,Calcutta Customs and Mohun Bagan(1984).You played Senior Nationals for Bengal state from 1962 to 1972 and captained the team also. You ably supported Olympian Gurbux Singh during his time in Bengal senior national team in defence all those years .You were in the Indian national team probables list consisting of Olympians Prithpal Singh ,Gurbux Singh and Trilochan Singh.

You managed the Bengal team in Senior nationals team also after retiring as a player

You finally donned the color of a national hockey umpire and officiated in International Nehru Gold Cup ,Beighton Cup and Senior National Championships

You could have easily been an India colour had you not put the Meerut house and extended family interests before your personal ambition and career .You finally joined Calcutta Customs as Preventine Officer and went up all the way and retired as Assistant Commisioner of Customs and Central Excise, holding independent charge of Haldia Dock and Port Complex in eastern india.

You are survived by wife , two sons and a daughter ,who too like you carried forward the legacy of Meerut sports family .

Wife Smt Ashaji is a BSc graduate from Lucknow University and a devoted housewife.

Son Prashant played for Subjunior and Junior Bengal team in national hockey and played for proffessional clubs in Bengal hockey league like Aryans Club, Khalsa Blues and Mohun Bagan club He is a established Marine Engineer working with Saudi Aramco as Superintendent Engineer .He is residing in Pune.

Daughter Sangeeta was a established Rowing champion who represented India at the Asian Rowing Champioship in Hongkong ,she represented Senior Bengal state in the Rowing Nationals and was a gold medal winner.She represented All India University team and was featured in "SPORTS STAR" magazine ,a magazine of repute of yesteryears. She is a Electronics and Telecommunications Engineer and a MBA postgraduate in marketing and settled in California USA.

Son Pradeep represented for hockey and cricket in aryans club and is a marine engineer by profession and residing in poona.

Thus Pramod ji not only followed the principal of hard work and education in attaining great heights for himself but also imbibed the same in his children. Salute and homage to the great soul .May his soul rest in peace.

(र. क्र. 343)

श्रद्धांजलि : स्व. श्रीमती शारदा चतुर्वेदी

- डॉ. अनिल चतुर्वेदी, दिल्ली

'नारी तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पग तल में, पीयूष स्रोत सी बहा करो, जीवन के सुंदर समतल में।'

हिंदी काव्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभकार जिनके काव्य में कमनीय माधुर्य की रसधारा प्रवाहित होती थी श्री जयशंकर प्रसाद की उपरोक्त पंक्तियाँ श्रद्धेय शारदा बहनजी के कृतित्व व व्यक्तित्व को चरितार्थ करती हैं। मेरे बचपन से अब तक अनेक रोचक संस्मरण मेरे मानसपटल पर अंकित हैं जिनमें बहनजी के बहुआयामी व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक अंकित है। मानवीय करुणा, जिम्मेदारी, समझदारी, दुनियादारी एवं उनके जीवन के सूक्ष्म और व्यापक आयामों के चित्रण भी स्मृति में संचित हैं। नारी की संवेदनशील भावनाओं, त्याग, ममता, वात्सल्य, समर्पण, लज्जा, सहजता एवं सरसता का बेजोड़.मिश्रण उनमें था। शारदा बहनजी अद्भुत, आकर्षक मनमोहिनी थीं। सामनेवाले को बरबस अपनी लपेट में लपेटनेवाली। बात करने से पहले एक चंचल मुसकराहट उनके होठों पर नाचने लगती थी जैसे बात कहने से पहले ही उन्होंने सारी बात कर ली है। इतना प्यार, इतना दुलार, इतना लाड़ भला उनके सिवा किसी दूसरे में कहाँ था। आज अष्टमी के दिन यह लेख लिखते समय उनके बारे में लिख रहा हूँ तो लगता है कि वे सामने ही बैठी हैं और अपने सम्मोहन भरे अंदाज में बतिया रही हैं। आज भी उनकी भाव भंगिमा याद आती है तो किंचित स्तब्ध, मौन और अवाक सा रह जाता हूँ किकहाँ से शुरू करूँ और कहाँ लेखनी को विराम दूँ, अष्टमी के दिन माताजी का श्राद्ध है उन्हीं के चित्र के सामने बैठकर बहिनजी की स्मृतियों को समेटने का प्रयास कर रहा हूँ शायद श्रद्धेय माताजी की तेरहवीं वह सामाजिककार्यक्रम था, जिसमें बहिनजी व्हीलचेयर पर बैठी कार्यक्रम में उपस्थित थी। वे दोनों मिलती तो इधर-उधर की न जाने किस-किसकी बातों में मगन हो जातीं। उन दोनों को बतरस का चस्का था। बहनजी दमखम वाली दमदार दिलदार व दरियादिल महिला थीं। शारदा बहिनजी से मेरे अनेक रिश्ते थे। वह मेरी बड़ी बुआजी की भांजी थी। मेरी चाची स्व. श्रीमती सुशीला चतुर्वेदी की छोटी बहिन। जिसके कारण गरमियों की छुट्टियों में उनका आगरा आगमन होता था फिर सिनेमा, समोसे, लस्सी का दौर। लगभग 10-12 बहिन तथा बंधुवर राधाकांतजी एवं मैं सुरक्षा कवच के रूप में साथ चलते थे क्योंकि पचपन-साठ के दशक में घर की बेटियों को घर से बाहर निकलने की स्वीकृति केवल भाई की सुरक्षा के साथ ही संभव थी। यह बहिनजी की उदारता का परिचय था कि हर बच्चा, जवान बड़ा, बूढ़ा परिवार का हर सदस्य उनका प्रशंसक बन जाता था। अपनों से अपनेपन से व्यवहार और अपनी बात कहने का उनका अंदाजे बँया ही कुछ और था। वृहद परिवार के हर किसी सदस्य को यह अहसास कराना कि चाची, मौसी, बुआ और बहिनजी केवल उसी से विशेष प्रेम करती हैं या उसके सुख-दुरूख में हाथ बँटाती है यह इतना आसान नहीं है आज के युग में जब पारिवारिक मान्यताएँ बिखर रही हैं। परंपराओं और संस्कारों का हनन हो रहा है, संयुक्त परिवार विघटन के कगार पर हैं ऐसे समय एक विशाल संयुक्त परिवार को व्यवहारिकता एक सूत्र में बाँधकर चलने की कला केवल बहनजी से सीखी जा सकती है। वे एक आदर्श ग्रहिणी ही नहीं वरन एक संयुक्त परिवार को संगठित कर समदर्श भाव से व्यवस्थित प्रबंधन का आदर्श प्रस्तुत कर गई हैं। एक ओर वे पुरानी सभ्यताओं एवं संस्कारों के प्रति समर्पित थीं तो दूसरी ओर आधुनिकता से उन्हें कोई परहेज नहीं था। वे मेरी चचेरी बहिन रश्मि की चचिया सास भी हैं। मेरी अद्ध ांगिनी सुजाता की बुआ और सुजाता की चचेरी बहिन मृदुला की भी चाची सास थीं। शादी के बाद जब मैंने उन्हें संबोधन के लिए बुआ कहा तो बोलीं मेरे लिए तो तुम अनिल हो मुझे बहिनजी कहा कर। मैंने उन्हें विपरीत विषम एवं विकट परिस्थितियों में विचलित होते नहीं देखा। दुःख एवं संकट के समय ही मानवीय व्यवहार का सही आंकलन किया जा सकता है। संतुलित सौम्य व्यवहार ही इंसान के चरित्र का दर्पण होता है। व्यवहार अर्थात विभिन्न परिस्थितियों में हम कैसा व्यवहार करते हैं। अगर हमें कोई उत्तेजित करे तो आवेश में हम क्रोध में अपना आपा खो बैठते हैं लेकिन बहिनजी सहनशीलता, सहिष्णुता एवं संयम की वह त्रिमूर्ति थीं जो मुसकराकर सामनेवाले को निरुत्तर कर देती थीं। गंभीर वातावरण को अपनी विनोदप्रियता से सहज बनाने की कला में भी उन्हें महारत हासिल थी। उनकी दीर्घायु का राज था उमंग, उल्लास एवं उत्साह जिससे उनको ऊर्जा मिलती थी। यद्यपि पिछले कुछ वर्षों से वह बिस्तर पर ही थी कभी-कभी करवट बदलने में भी कष्ट होता था लेकिन पूछो तो मुसकराकर यही कहतीं, श्मैं ठीक हूँ बेटा।' पारिवारिक, सामाजिक, मानवीय संबंधों के निर्वाहन में पूरी निष्ठा से समर्पित थी। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे ऐसी दिव्यात्मा के सानिध्य का सुख मिला। मैं उनकी आस्था, आत्मीयता, अपनत्व का पात्र रहा। 'वाटिका में भाँति-भाँति के पुष्प, खिलते शान और गुमान में, किंतु वंदनीय पुष्प वही जो, छोड़ जाए बीज वसुधा और सुगंध आसमान में।' वंदनीय, अभिनंदनीय शारदा बहनजी की स्मृति को शतः-शतः नमन!

(र. क्र. 344)

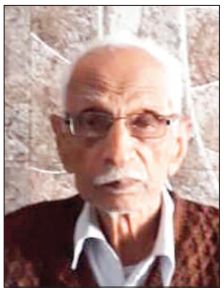

स्व. दिनेश चंद चतुर्वेदी, बप्पू
(पूर्व संपादक चतुर्वेदी चनद्रिका) के स्मरण

- मुकुल चतुर्वेदी, गाजियाबाद

हमारे परम पूज्य स्व. दिनेश चंद चतुर्वेदी (बप्पू) का जन्म अश्वनी मास कृष्ण पक्ष की प्रथम तिथि पड़वा को दिनांक 06 .09.1922 में हुआ था। समाज उनकी सहृदयता के कारण उन्हें प्यार से बप्पू के नाम से पुकारता था। उनका बचपन मध्य प्रदेश के लश्कर ग्वालियर में बीता। वहीं उनकी प्रारंभिक शिक्षा अपने सहपाठी पूर्व प्रधानमंत्री स्व. अटल बिहारी वाजपेयी जी के साथ प्रारम्भ हुई। परन्तु बाल्यकाल (10 वर्ष की उम्र) में ही उनके पिता स्व. बाबूराम चतुर्वेदी ने सन्यास ग्रहण कर लिया। मैनपुरी में अपनी मौसी श्रीमति जमुना देवी पत्नी स्व. हीरालाल जी के संरक्षण में रहकर 10वी तक की शिक्षा मैनपुरी में की। इस दौरान उन्होंने स्काउट गाइड में भी सराहनीय कार्य किया। तत्पश्चात उन्होंने कानपुर में औधोगिक विभाग में कार्य किया। उसी दौरान द्वितीय विश्व युद्ध भी हुआ। आपने बंदूक चलाना एवं युद्ध के दौरान अपने बचाव में किये जाने वाले अनेक कार्य किये। परंतु उन्हें घरेलू कारणवश नौकरी छोड़नी पड़ी। उस समय उनका वक्त संघर्षमय बीता। फिर मैनपुरी में ही उन्हें लघु सिंचाई विभाग में नौकरी की। अपने सेवाकाल में वे आगरा व देहरादून में भी रहे। देहरादून में रहने के दौरान उन्होंने शहर में चतुर्वेदी शाखा सभा का आरंभ किया। जिसमें जयगोपाल जी, ऋषभ जी,अजय जी,प्रदीप जी, राजकुमार जी का विशेष योगदान रहा। वे देहरादून से सन 1985 में सेवानिवृत्त हुए। ग्वालियर में रहने के दौरान उनके संबंध सिंधिया परिवार से भी हुए। बप्पू जी को सन 1941 में जीवाजी राव सिंधिया के विवाह का निमंत्रण पत्र भी मिला था। सन 1980 में चुनाव के दौरान सिंधिया परिवार ने उन्हें चुनाव में विजया राजे सिंधिया के सहयोग हेतु रायबरेली बुलाया था।परिणाम स्वरुप सिंधिया परिवार ने उन्हें धन्यवाद हेतु पत्र भी भेजा।

17 मार्च 1987 में उन्होंने होलीमिलन मैनपुरी में समाज के सहयोग से किया। जिसमें मैनपुरी चतुर्वेदी समाज के प्रवासी बाँधवों को भी बुलाया गया था। जब माथुर चतुर्वेदी महासभा के चुनाव में मैनपुरी के स्व. ब्रजेन्द्र नाथ मिश्र उर्फ लालू जी के सभापतित्व काल में उनकी विशेष सलाहकार समिति में बप्पू जी का विशेष योगदान था। बप्पू जी को चतुर्वेदी पत्रिका का संपादक बनाया गया। जिसको उन्होंने बखूबी निभाया। उसके बाद उन्होंने मैनपुरी के समस्त चतुर्वेदी बांधवों की परिचायका पुस्तक समाज के सहयोग से निकाली। उन्होंने अनेक संत एवं विद्वानों को सुनकर उनके द्वारा रचित ग्रंथो एवं पुस्तकों को पढ़कर कुछ जीवन उपयोगी आध्यात्मिक, धार्मिक एवं दार्शनिक शब्दों को एकत्रीकरण करके अपनी एक पुस्तक भाव बिंदु नाम से प्रकाशित कर अपने स्नेहीजनों तक पहुँचाने की व्यवस्था की। उन्होंने अपने सेवानिवृत्त के बाद मैनपुरी में माथुर चतुर्वेदी पुस्तकालय व हनुमान मंदिर के जीर्णोद्धार हेतु पूर्ण सेवा की। वे अपना अधिकतम समय धार्मिक पुस्तकों के पढ़ने में गुजारते थे। उनके तीन पुत्र गिरीज किशोर चतुर्वेदी उर्फ काका (कानपुर) नीरज चतुर्वेदी व मुकुल चतुर्वेदी (भाजपा नेता गाजियाबाद) व दो पुत्री श्रीमती कश्मीरी देवी व सुमन चतुर्वेदी हैं। आप लगभग 16-17 वर्ष पूर्व से अपनी पत्नी स्व. श्रीमती प्रभा चतुर्वेदी के साथ अपने छोटे पुत्र मुकुल चतुर्वेदी के पास गाजियाबाद में निवासरत थे। अन्ततः उनकी पत्नी का स्वर्गवास 2005 में हो गया। बप्पू जी की धार्मिक व सामाजिक पुस्तकों की व्यवस्था उनका नाती शुभम करता रहता था। ज्ञान एवं कृष्ण भक्ति की तृप्ति के सतत प्रयास में रहते हुए वे वैसाख मास शुक्ल पक्ष की त्रियोदशी दिनांक 05.05.2020 को वे प्रभु चरणों में विलीन हो गए। ऐसी महान व्यक्तित्व को समस्त परिवार की अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि । (र. क्र. 340)

समाज समाचार

– चि. सुशांत सुपुत्र श्री शोभित चतुर्वेदी (कछपुरा/कानपुर) ने कक्षा 12 वी की परीक्षा आई सी एस सी बोर्ड के अन्तर्गत 94 प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

– कु. इरा चतुर्वेदी पुत्री श्री पियुष चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) ने सी. बी. एस. सी. बोर्ड के अंतर्गत कक्षा दसवीं की परीक्षा 87 प्रतिशत अंको से उत्तीर्ण की। बधाई।

– चि.रीतेश चतुर्वेदी सुपुत्र श्री नीरज चतुर्वेदी, लाला (मैनपुरी) ने सी बी एस ई बोर्ड के अंतर्गत कक्षा 12 की परीक्षा 90 प्रतिशत अंको के साथ उत्तीर्ण की। बधाई।

– कु. निकिता सुपुत्री श्रीमती शिल्पी जितेंद्र चतुर्वेदी (उचाढ़/डबरा) ने इंटरनेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ इन्फॉर्मेशन से मास्टर डिग्री आफ साइन्स विद रिसर्च किया है। इस अवसर पर 501/- रुपये महासभा को प्रदान किये। बधाई।

(र.क्र.347)

शोक समाचार

* श्री सुनील जी सुपुत्र स्व. राधारमण चतुर्वेदी (करहल/लखनऊ) का स्वर्गवास दिनाँक 25/08/20 को लखनऊ में हो गया।
* श्री राकेश रावत पुत्र स्व.श्री सुरेशचंद्र रावत (अनूपशहर/कोटा) का स्वर्गवास दिनाँक 22 अगस्त 2020 को कोटा में हो गया।
* श्री नन्द किशोर चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री गंगाधर चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 27.08.2020 को 86 वर्ष की आयु में हो गया।
* श्री रजत चतुर्वेदी सुपुत्र श्री नवीनचंद्र चतुर्वेदी (कमतरी/कोटा) का आकस्मिक स्वर्गवास अल्पायु में दिनांक 27 अगस्त 2020 को हो गया।
* श्री आलोक पुत्र श्री महेश चतुर्वेदी (तालगांव/ कलुंगा) का स्वर्गवास दिनाँक 29/08/2020 को कलुंगा में हो गया।
* श्री प्रफुल्ल कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/ करैरा, शिवपुरी) का स्वर्गवास दिनांक 29 अगस्त 2020 को 84 वर्ष की आयु में हो गया।
* श्री गोपाल जी चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री हेमचन्द्र जी (इटावा/ रतलाम) का स्वर्गवास दिनाँक 01.09.2020 को रतलाम में हो गया।
* श्री नरेंद्र कुमार चतुर्वेदी (मुन्ना) पुत्र श्री रामदास चतुर्वेदी (शाहबाद/गाज़ियाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 02.09.20 को हो गया है।
* श्री नित्यानंद चतुर्वेदी पुत्र स्व. श्री हजारी लाल चतुर्वेदी (भरतवाल, मैनपुरी) का स्वर्गवास 80 वर्ष की आयु में दिनाँक 4/9/2020 को हो गया।
* श्रीमती हेमलता पत्नी श्री वासुदेव चतुर्वेदी (ढाबी, नीमच) का स्वर्गवास दिनाँक 8 सितंबर 2020 को हो गया।
* श्री शिवदत्त चतुर्वेदी पुत्र स्व. गणेशलालजी चतुर्वेदी (मिश्रो की पीपली, चित्तौड़गढ़) का स्वर्गवास दिनाँक 09.09. 2020 को हो गया।
* श्री अवधेश चंद्र चौबे (होलीपुरा/हरदा) का स्वर्गवास दिनाँक 11 सिंतबर 2020 को हरदा (म.प्र.) में लगभग 80 वर्ष की आयु में हरदा में हो गया।
* श्री अरविन्द मिश्रा पुत्र स्व. केशव देव (कम्पिल/कानपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 11.09.2020 को बेंगलोर में हो गया।
* श्रीमती अंजना चतुर्वेदी पत्नी स्व. मुकेश चतुर्वेदी (जयपुर) का स्वर्गवास लगभग 55 वर्ष की आयु में हो गया।
* श्री सतीश चतुर्वेदी (मथुरा/जयपुर) का स्वर्गवास दिनाँक 12/09/2020 को जयपुर में हो गया।
* श्रीमती पदम चतुर्वेदी पत्नी स्व. श्री अमरनाथ जी चतुर्वेदी (मैनपुरी/देहरादून) का स्वर्गवास दिनांक 30 जुलाई को हो गया।
* कु. मोनिका चतुर्वेदी सुपुत्री श्री विनोद कुमार चतुर्वेदी (मैनपुरी/आगरा) का स्वर्गवास ४२ वर्ष की आयु में दिनांक ८ सितम्बर 2020 को हो गया।
* श्री माथुर चतुर्वेदी सभा, कोटा के संरक्षक श्री ज्ञानप्रकाश चतुर्वेदी का स्वर्गवास दिनाँक 14 सितंबर 2020 को 90 वर्ष की आयु में हो गया।
* श्री अवधेश चन्द्र जी मिश्रा (कम्पिल/झाँसी /वल्लवगढ़) का स्वर्गवास 94 वर्ष की आयु में दिनाँक 14.09.2020 को वल्लवगढ़ में हो गया।
* श्रीमती सुमन चतुर्वेदी (सुक्को) पत्नी स्वर्गीय श्री धनेश जी चतुर्वेदी (चौबान मोहल्ला, फिरोजाबाद) का स्वर्गवास दिनाँक 13 सितंबर 2020 को हो गया।
* प्रवीण चतुर्वेदी (तोषी) सुपुत्र स्व० सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/एटा) का स्वर्गवास दिनाँक 15/09/2020 को जयपुर में हो गया।
* श्री दीपक (मनोज) चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. जगमोहन चतुर्वेदी (काली) (कछपुरा/बाह) का स्वर्गवास 15/09/2020 को मथुरा में हो गया।
* श्री समित (छौनू) सुपुत्र श्री प्रमेश जी (मैनपुरी/इन्दौर) का स्वर्गवास 45 वर्ष की आयु में दिनांक 16/09/2020 को इंदौर में हो गया।
* हमारे समाज के श्रेष्ठ गायको में से एक श्री विनय सोती सुपुत्र स्व.श्री परमानंद सोती (मैनपुरी) का स्वर्गवास दिनाँक 16 सितंबर 2020 को मैनपुरी में हो गया।
* प्रवीण चतुर्वेदी (तोषी) सुपुत्र स्व० सुरेश चन्द्र चतुर्वेदी (जहाँगीरपुर/एटा) का स्वर्गवास दिनाँक 15/09/2020 को जयपुर में हो गया।
* श्री राजीव चतुर्वेदी सुपुत्र स्व. श्री उपेन्द्रनाथ चतुर्वेदी (चंद्रपुर/भोपाल/पुणे) का स्वर्गवास दिनाँक 19.09.20 को हो गया।
* श्रीमती सरिता चतुर्वेदी (नीलू) पत्नी श्री शरद चन्द्र चतुर्वेदी (मथुरा) का स्वर्गवास 55 वर्ष की आयु में दिनाँक 18.09.2020 को दिल्ली में हो गया।
* श्रीमती उर्मिला चतुर्वेदी पत्नी श्री ब्रज भूषण चतुर्वेदी (इंदौर) का स्वर्गवास दिनाँक 20 सितंबर 2020 को 78 वर्ष की आयु में इंदौर में हो गया।

महासभा एवं चतुर्वेदी चंद्रिका परिवार दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।